



भारत का नं. 1 संस्थान कौटिल्य एकेडमी

सफलता का प्रदेश द्वार ...

Model Answer Key

Date : 03/11/2019

A - उपनिषद क्या है? सबसे पुराने उपनिषद का नाम बताइए।

- इनका शाब्दिक अर्थ उस विद्या से है जो गुरु के समीप बैठकर, सीखा जाता है।
- इसमें आत्मा और ब्रह्मा के संबंध में दार्शनिक चिंतन है।
- इनकी संख्या—108 हैं। इन्हें वेदान्त भी कहते हैं।
- प्राचीन उपनिषद—छांदोग्य उपनिषद है।

B - अलवर और नयनार कौन थे ?

- अलवर और नयनार, दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन के प्रमुख संत थे।
- अलवर—विष्णु के उपासक थे जबकि नयनार शिव भक्त थे।
- अलवर संतो की संख्या—12 थी जबकि नयनार संतो की संख्या— 63 थी।
- अलवर संत—पोयगई अण्डाल, नयनार संत—अप्पर

C - लोथल—

- यह गुजरात राज्य में अवस्थित है।
- सिंधु सभ्यता का प्रमुख बन्दरगाह था।
- इसे लघु हड़प्पा मोहन जोदड़ो भी कहाँ जाता है।
- तीन युगमित समाधि स्थल मिले।
- खोजकर्ता—एस.आर.राव. (1957) में।
- यहां से चावल में अवशेष मिले थे।

D- यजुर्वेद –

- यह वेद गद्य व पद्य दोनो में रचित है।
- इसमें यज्ञों के नियम व विधियों का उल्लेख है।
- इसके पुरोहित—अध्वर्यु कहलाता है।
- इसके दो भाग है
(i) कृष्ण व
(ii) शुक्ल यजुर्वेद।

A - What are upanishad? Name the oldest upanishad.

The word Upanishad means sitting down near someone and denotes a student sitting near his guru to learn.

The Upanishads a part of the Vedas, are ancient Sanskrit texts that contain some of the central philosophical concepts and ideas of Hinduism. The Brihadaranyaka Upanishad is the oldest one .

B- Who are the 'Alvars' and 'Nayanars' ?

The alvars, also spelt as Alwars or azhwars were Tamil poet-saints of South India who espoused bhakti (devotion) to the Hindu god Vishnu or his avatar Krishna in their songs of longing, ecstasy and service.

They were 12 in number.

Modern academics place the Alvars date between 5th century to 10th century CE.

The Nayanars were a group of 63 saints (also saint poets) in the 6th to 8th century who were devoted to the Hindu god Shiva in Tamil Nadu. The names of the Nayanars were first compiled by Sundarar.

C - Lothal

Lothal was one of the southernmost cities of the ancient Indus Valley Civilization, located in the modern state of Gujarat and first inhabited c. 3700 BCE.

Discovered in 1954 by S.R Rao.

Situated on the bank of river Bhogava.

D - Yajur Veda

The Yajur veda is a ritual veda.

Its hymns were recited by Adhvaryus.

It is divided in two parts - Krishna Yajur Veda and Shukla Yajur Veda.

Yajur veda is compiled in both verse and prose.

(2)

E - वेदांग

- वेदों का अर्थ समझने हेतु वेदांगों की रचना हुई, जिनकी कुल संख्या-6 है।
- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष।

F - चारों बौद्ध परिषद के स्थान एवं संरक्षक का नाम लिखें ?

संगिति	समय	स्थल	संरक्षक
प्रथम	483 ई.पू.	सप्तपर्णि (राजगृह)	अजात शत्रु वंश-हर्यक
द्वितीय	383 ई.पू.	वैशाली	कालाशोक वंश-शिशुनाग
तृतीय	250 ई.पू.	पाटलिपुत्र	अशोक वंश-मौर्य
चतुर्थ	72 ई.	कुण्डलवन	कनिष्क
पांचवी	7वीं सदी	कन्नौज	हर्षवर्द्धन

G- स्कन्द गुप्त – (455-467ई.)

- यह गुप्त वंश का अंतिम प्रतापी शासक था।
- उपाधियाँ-कृमादित्य, शकृादित्य।
- घटना-हुणों का प्रथम आक्रमण की जानकारी, जूनागढ़ व भितरी स्तम्भ लेख से।
- वृषभ आकृति के सिक्के चलाए।

H- खुरासान अभियान –

- सलतनत कालीन, मोहम्मद बिन तुगलक ने खुरासान विजय की योजना बनाई थी।
- मध्य एशिया में स्थित है जहाँ राजनैतिक शून्यता का लाभ उठाने के उद्देश्य से।
- इसके लिए 370000 नई सेना गठन व 1 वर्ष का अग्रिम वेतन दिया।
- इसलिए इसे 'असफलताओं' का बादशाह कहाँ जाता है।

I- पानीपत की तीसरी लड़ाई

- पानीपत का तृतीय युद्ध अहमद शाह अब्दाली और मराठों के बीच हुआ। पानीपत की तीसरी लड़ाई मराठा साम्राज्य (सदाशिवा राव भाउ) और अफगानिस्तान के अहमद शाह अब्दाली, जिसे अहमद शाह दुरानी भी कहा जाता है के बीच 14 जनवरी 1761 को वर्तमान हरियाणा में स्थित पानीपत के मैदान में हुआ। इस युद्ध में मराठों की पराजय हुई। और मराठा साम्राज्य का पतन का कारण रहा।

E - Vedangas

The Vedanga are six auxiliary disciplines of Hinduism that developed in ancient times, and have been connected with the study of the Vedas. These are -
Shiksha, Vyakarana, Nirukta, Chhanda, Jyotisha.

F - Write the name of the place and the Patron of all the four Buddhist council.

Rajgir	- Ajatshatru
Vaishali	- Kalshoka
Patliputra	- Ashok
Kundalvan	- Kanishka

G - Skandagupta

Skandagupta (died 467 AD) was a Gupta Emperor of northern India. He is generally considered the last of the great Gupta Emperors. He successfully repelled the Huns and assumed the title of Vikramaditya (Bhitari Pillar Inscription).

H - Khurasan Expedition

Muhammad Bin Tuglaq planned to conquer the kingdom of Khurasan which was then ruled by Iraq. He recruited one lakh soldiers for this purpose and spent nearly three lakhs of rupees for this mission. But this project was dropped because he did not get the help of the Persian emperor who had assured him to help in this mission. Ultimately the Sultan incurred a huge financial loss and his reputation as a conqueror hampered much.

I - Third Battle of Panipat

The Third Battle of Panipat was a major battle of Indian history, fought on 14th January 1761. It was fought between the Afghan forces of Ahmad Shah Durrani along with his local Rohilla and other Pathan and Oudh allies, against the Maratha Empire.

The Durrani Afghan forces and their allies finally won and defeated the Marathas

J- कलचुरी वंश—

- कुलचुरी वंश अत्यंत प्राचीन था जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।
- यह दो शाखा में विभक्त है—
महिष्मती शाखा — वास्तविक संस्थापक कृष्णराज था
त्रिपुरी शाखा — वास्तविक संस्थापक कोकल्ल प्रथम था।
— विस्तार गोमती—नर्मदा

K- निम्बार्क

- भक्ति आन्दोलन के प्रमुख संत थे।
- दार्शनिक मत—द्वैताद्वैतवाद,
- संस्थापक—सनक सम्प्रदाय,
- जन्म—मद्रास के बल्लारी जिल में।
- कार्यक्षेत्र—वृन्दावन, उपाधि—सुदर्शन चक्र का अवतार
- सगुण भक्ति के समर्थक।

L- वज्रयान—

- बौद्ध धर्म का सम्प्रदाय है।
- यह बौद्ध दर्शन की जटिल प्रणाली है।
- इसमें तंत्रयान, गुप्त मंत्र, होता है।
- भारत व अन्य पड़ोसी देशों, विशेषकर तिब्बत में प्रचलित था।
- इसमें बुद्ध की अनेक पत्नियों की कल्पना की गई।
- 6 वीं शताब्दी की इसका उदय हुआ।

M- नक्शबंदी (आदेश)

- संस्थापक—ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्दी एवं अलदीन
- भारत में संस्थापक— ख्वाजा बाकी बिल्लाह
- यह सर्वाधिक कट्टरवादी था, इसके अनुयायी ने शरीयत पर बहुत जोर दिया।
- सूफी संत— शेख अहमद सर हिन्दी
- इन्होंने संगीत को इस्लाम धर्म के विरुद्ध बतलायां

N- गणगौर नृत्य —

- म.प्र. के निमाड़ अंचल का धार्मिक लोकनृत्य है।
- चैत्रमास में, गणगौर पर्व के अवसर पर किया जाता है।
- प्रदेश में झोला तथा झालरिया शैली के नृत्य किये

J - Kalchuri Dynasty

The Kalchuris of **Tripuri** were central Indian dynasty during 19th to 12th century. They ruled a historical Chedi region (also known as Dhala-Mandala), from their capital Tripuri (present day Tewar near jabalpur). The Kalchuri of Tripuri fought several battles against the Chandelas of Jejakabhukti, and in later had matrimonial alliance with them.

K - Nimbark

Nimbarkacarya or Nimbark was a Hindu philosopher and commentator, known for propagating the Vaishnava doctrine of **bhedabheda dvaitadvaita**, duality in unity. There is considerable disagreement regarding the dates when Nimbarka lived and taught; according to the Vedic scriptures, he was born in 3096 B.C.E., but modern historical research places him in the 13th or 14th century. The works attributed to Nimbarka are Vedanta-parijata-saurabha ; Dashashloki, Isvara and jagat.

L - Vajrayana

Vajrayana means “The Vehicle of the Thunderbolt”, also known as tantric Buddhism. This Buddhist school developed in India around 900 CE. It is grounded on esoteric elements and very complex set of rituals compared with the rest of the Buddhist schools.

M - Naqshbandi Order

The Naqshbandi is a major Sunni spiritual order of Sufism. This order was founded by Bahibillah and the followers were very orthodox compared to all other orders. This order was popularized in India by Babur who was deeply devoted to Naqshbandiyya leader Khwaja Ubaidullah Ahrar. One of the disciples of Khwaja was Shaikh Ahmad Sirhindi.

N - Gangaur Dance

This is a traditional religious folk dance. It is performed during the gangaur festival in the month of Chaitra. Gangaur is a folk goddess, a symbol of Parvati. There are two types of dances in gangaur: Jhalariya and Jhola. In Jhalariya

(4)

जाते हैं।

- देवता धनियार, सूर्यदेव की उपासना।

O- हसन निजामी –

- सलतनत कालीन प्रमुख साहित्यकार थे।
- इसे कुतुबुद्दीन सेवक ने संरक्षण दिया।
- रचना-ताज-उज-मासिर
- गौरी के भारत आक्रमण की जानकारी इसके लेखन से प्राप्त होती हैं।

dance, men and women dance in different groups.

In Jhola. two styles are there: Ada and Khada. Main instruments are dhol and thali.

O - Hassan Nizami

Hasan Nizami was a Persian language poet and historian, who lived in the 12th and 13th centuries. He migrated from Nishapur to Delhi in India, where he wrote Tajul-Ma'asir, the first official history of the Delhi Sultanate.



PART- A 6 Marks

A - ऋग्वैदिक काल की राजनीतिक संगठन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

– इस काल की जानकारी ऋग्वेद से प्राप्त होती है। इस काल की राजनीतिक व्यवस्था कबीलाई संरचना पर आधारित थी।

ऋग्वेद में गणतंत्र का प्रारंभिक उल्लेख मिलता है किन्तु राजनीतिक व्यवस्था को लोकप्रिय राजतंत्रात्मक था। इस काल में राजा निरंकुश नहीं बल्कि प्रजाहितैषी होता था।

इस काल में राजा की सहायता के लिए तीन संस्थाएँ थी, सभा, समिति और विदथ जो आर्यों की प्राचीन संस्था थी।

सबसे बड़ी इस काल में प्रशासनिक ईकाई जन थी, जबकि छोटी इकाई कुल थी। साथ ही राजा की सहायता के लिए प्रशासनिक एवं न्यायिक अधिकारियों का भी उल्लेख प्राप्त होता है,

जैसे— पुरोहित, सेनानी, विशपति, न्यायिक, राजा।

ऋग्वैदिक काल में सैनिक प्रशासन की भी जानकारी प्राप्त होती है क्योंकि स्थायी सेना का अभाव था।

A - Write a short note on Rig Vedic political organisation.

The polity of the Early Vedic period was basically a tribal polity with the tribal chief in the centre. The lowest unit of the Rig-Vedic society was the patriarchal family or kula. A number of families bound together by kinship ties of blood formed a clan. The 'grama' consisted of several families. It was under a headman known as 'gramani'. Several villagers formed a 'vis'. It was placed under a 'visapati'. He was a military leader.

A group of 'vishes' formed a 'jana' (tribe) whose members were bound together by real or supposed ties of kinship. 'Gopa' was the head of one 'jana'.

Several janas formed a 'janapada' or 'kingdom'. The 'Rajan' or the king was the head of the Janapada.

Rajana looked after the affairs of the tribe with the help of other tribal members and two tribal assemblies i.e. **Sabha** and **Samiti**. Sabha is consisted of elder members of the tribe, whereas the Samiti which mainly dealt with policy decisions and political business.

Women were allowed to participate in the proceedings of Sabha and **Vidhata**. In day to day administration the king was assisted by the two types of Purohita i.e. **Vasishtha** and **Vishwamitra**. The King did not maintain any regular army as there was no Kingdom as such. In fact Rig Vedic King did not rule over the kingdom, but over tribe.

Later Vedic Period

The Political system of the later Vedic period was shifted towards Monarchy. Now, the King ruled over an area of land called Janapada. The King started maintaining an army and the Bureaucracy also got developed. The Kingship was being given the status of the divine character and also this period witnesses the emergence of the concept of King of Kings.

B - नादिर शाह का आक्रमण और भारत पर इसका प्रभाव।

नादिर शाह (ईरान का नेपोलियर) फारस का शासक था, नादिरशाह भारत के प्रति अपार धन के कारण आकर्षित हुआ। उसकी इच्छा धन को लुटने की थी।

तत्पश्चात् नादिर शाह ने 1738 में काबुल पर अधिकार कर सिंधु नदी को पार कर लाहौर के गवर्नर को

B - Nadir Shah Invasion and its impact on India.

Nader Shah was the Shahanshah of the Persian Empire. He belonged to the Afsharid dynasty. Nadir Shah was attracted to India by the fabulous wealth for which it was always famous. The visible weakness of the Mughal Empire made such spoliation possible.

हराया।

इसके बाद फरवरी 1739 ई. नादिर शाह ने पंजाब पर आक्रमण किया।

मुगल शासक, मुहम्मद शाह, मीर बक्शी निजामुल मुल्क तथा सआदत खॉँ और नादिर शाह के मध्य करनाल का युद्ध हुआ।

भारत पर प्रभाव— नादिर शाह ने 50 दिन से अधिक रहा, अधिक लूटपाट की।

प्रसिद्ध राजसिंहासन 'तख्त-ए-ताउस तथा कोहिनूर हीरा भी ले गया। साथ ही मुगल साम्राज्य का भारत में विघटन व विदेशी आक्रमण होले लगे।

On February 24, 1739, the Battle of Karnal was fought between the Mughal Emperor Muhammad Shah and the invading Iranian army of Nader Shah. Nader Shah had a crushing victory.

Impact -

He ordered a general massacre of Delhi, which was also known as the infamous "Qatal-e-am". During this massacre, the citizens of Delhi were looted and raided.

The whole city of Delhi was destroyed, looted, plundered and ruined by the army of Nadir Shah. Nadir Shah took with him the Peacock throne built by Shah Jahan. He also took the legendary "Koh-i-noor" diamond.

All Mughal land west of the Indus were ceded to Nader Shah. The retreating Persian army also took with them thousands of horses, camels and elephants.

Nader Shah's devastating invasion weakened the already declining Mughal Empire. More importantly, **it exposed the Mughal Empire's flaws and vulnerabilities and alerted the British East India Company** to a possibility of expanding its horizons.

C - भक्ति आंदोलन के प्रभाव क्या थे।

भक्ति आंदोलन के प्रभाव

- भक्ति आंदोलन के संतो ने लोगों के सामने कर्मकांडों से मुक्त जीवन का ऐसा लक्ष्य रखा, जिसमें ब्राह्मणों द्वारा लोगों के शोषण का कोई स्थान नहीं था।
- भक्ति आंदोलन के कई संतो ने हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया।
- भक्तिकाल के संतो ने साधारण लोगों की भाषाओं को उन्नत करने में अपना योगदान दिया। उन्होंने हिंदी, पंजाबी, बांग्ला, तेलुगू, कन्नड़, तमिल इत्यादि भाषाओं की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भक्ति आंदोलन के संत अपने उपदेश क्षेत्रीय भाषाओं में देते थे, ताकि वहाँ के लोग उनके उपदेश आसानी से सुन और समझ सकें। परिणामतः क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास हुआ।
- भक्ति आंदोलन के प्रभाव से जाति बंधन की जटिलता कुछ कम हुई। प्रायः सभी धर्म सुधारकों ने जाति-पाँति की निंदा की। फलतः हिंदू धर्म में जाति-पाँति के बंधन शिथिल हुए और निम्न वर्ग में व्यक्तियों को समाज में ऊँचा स्थान मिला। दलित वर्ग के लोगों में आत्मसम्मान की भावना जगी और उनके चरित्र का विकास हुआ।

C - What were the impact of Bhakti movement.

The development of Bhakti movement took place in Tamil Nadu between the seventh and twelfth centuries. It was reflected in the emotional poems of the Nayanars (devotees of Shiva) and Alvars (devotees of Vishnu). These saints looked upon religion not as a cold formal worship but as a loving bond based upon love between the worshipped and worshipper.

Impact of Bhakti movement:

- The Bhakti exponents raised their powerful voice against different types of immoral acts like infanticide and sati and encouraged prohibition of wine, tobacco and toddy. They aimed to set up a good social order upholding high moral values.
- Another remarkable impact was bringing about a unity among the Hindu and Muslim communities. The saints of the Bhakti movement and the Sufi saints spread message of friendship, amity, tolerance, peace and equality among all.
- The method of worship and belief in God took a new turn during the movement. Henceforth, importance was given to devotion and love for God. Bhakti or devotion for the Almighty was the central theme of this movement.

- निष्कर्षतः भक्ति आंदोलन से हिंदू और मुस्लिम सभ्यताओं का संपर्क हुआ और दोनों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। इस आंदोलन ने हिंदू और मुसलमान भक्तों को एक स्थान पर मिलने का अवसर पैदा किया। भक्तिमार्गी संतो ने समता का प्रचार किया, साथ ही जाति प्रथा और धार्मिक आडंबरों का विरोध किया। इन संतो के विचार परंपरा से आए विचारों से भिन्न थे। उन्होंने ऐसा समाज बनाने का प्रयत्न किया, जिसमें समता और न्याय हो और सभी धर्मों के लोग आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति कर सकें।
- The spirit of tolerance, harmony and mutual respect which was inaugurated by the Bhakti saints had another everlasting impact – the emergence of a new cult of Satya Pir. It started under the initiative of King Husain Shah of Jaunpur which later paved the way for the spirit of liberalism adopted by Akbar.
- The Bhakti movement promoted the growth of vernacular language and literature in different parts of the country. Kabir, Nanak and Chaitanya preached in their respective vernacular tongues
- Kabir in Hindi, Nanak in Gurmukhi and chaitanya in Bengali. The teachings acted as a healing balm to the suppressed classes. A deep-rooted change came about to lay the foundations of a liberal and composite Indian society.

D - बलबन के राजशाही एवं 'रक्त और लोह' सिद्धांत के बारे में उल्लेख करे।

बलबन के राजशाहीसे तात्पर्य उन सिद्धान्तों नीतियों तथा कार्यों से हैं, जिन्हें सुल्तान अपनी प्रभुसत्ता, अधिकार एवं शक्ति को स्पष्ट करने के लिए अपनाता है।

दैवीय सिद्धान्त—

- बलबन ने दैवीय अधिकार का समर्थन किया।
- जिन्ने ईलाही की उपाधि धारण की। शाही वंशज होने का दावा— किया।
- स्वयं अफराशियाब का वंशज का बताया
- तथा कुलीनता पर बल दिया।
- ईरानी आदर्शों एवं परंपराओं का चलन—
- सिजदा और 'पाबोस' की प्रथा शुरू की।
- ईरानी त्यौहार 'नौरोज' को प्रारंभ किया।

रक्त और लौह की नीति—

बलबन की न्याय व्यवस्था कठोर थी, उसकी शासन व्यवस्था का आधार यह नीति थी, जिसके अंतर्गत विद्रोही व्यक्ति की हत्या कर उसकी स्त्री व बच्चों को दास बना लिया जाता था।

E - राजेंद्र - I की सैन्य उपलब्धि का आकलन करें।

चोल राजवंश का सबसे महान शासक था उसने महान विजयों द्वारा साम्राज्य विस्तार व सैन्य उपलब्धि प्राप्त की।

सैन्य उपलब्धियाँ—

D - Mention about Balban theory of Kingship And Policy of ' Blood and Iron'.

Theory of Kingship:

Balban realized that problems arose on account of the weak position of the king. He therefore put forward the concept of Divine Right of Kings i.e. the king was the representative of God on earth. None could challenge him. The king was there to rule and the nobles and others were there to obey him. The powers of the king were absolute and he was a despot.

Blood and Iron Policy

This policy implied being ruthless to the enemies, use of sword, harshness and strictness and shedding blood. It allowed the use of all sorts of methods of terrorisms the enemies and inflicting violence upon them. Even before becoming the Sultan of Delhi, Balban had tried these measures to some extent to rise to high posts.

E - Assess the military achievement of Rajendra - I.

Rajendra I (1014-44 AD): is considered as the greatest Chola ruler. He completed the conquest of Sri Lanka in 1017 AD and captured the whole of Sri Lanka and made it a part of Chola empire. He suppressed the rebellions of a captured portion of the Krishna Tungabhadra doab. He

(9)

र्म के पतन का कारण बना था। वैष्णव, शैव और जैन धर्म भी अस्तित्व में थे। हर्ष को उदार और धर्मनिरपेक्ष राजा माना जाता था। राजस्व का मुख्य स्रोत भूमि की उपज का छठा हिस्सा होती थी। कुछ अन्य कर बंदरगाहों, घाटों आदि पर लगाए गए थे। शाही भूमि से प्राप्त लाभ, खदानों और जागीरदारी से अर्जित शाही खजाना भी राजस्व के स्रोत थे।

- There was four fold Varna system in place comprising- Brahmins, kshatriya, Vysya, and Sudra.
- Position of Women: Women lost the privileges of Swayamvar(the choice of choosing the husband), Widow remarriage was not permitted, especially among higher castes. The practice of Dowry and Sati became prevalent.
- During Harshavardhana's reign, trade and commerce declined, as depicted by a decrease in trade centres.
- This decline also affected handicraft and agriculture. This also led to rise of self-sufficient village economy.

G- पल्लवों और चालुक्यों के बीच संघर्ष पर एक छोटी टिप्पणी लिखिये।

पल्लव और चालुक्य राजाओं के बीच संघर्ष

पल्लव और बादामी के चालुक्य राजाओं के बीच संघर्ष का मुख्य कारण सिंहासन, प्रतिष्ठा और क्षेत्रीय संसाधनों की प्राप्ति का था, यह संघर्ष 8 वीं सदी से छठी शताब्दी तक जारी रहा बाद में मदुरै और तिन्नेवेल्ली के नियंत्रण में पाण्डय राजा भी इस संघर्ष में शामिल हो गए, दोनों राज्यों ने कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच के क्षेत्र पर वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास किया।

इस संघर्ष के दौरान महत्वपूर्ण घटनाएं

पुलकेशिन-द्वितीय (609-642) इस संघर्ष के दौरान पल्लव क्षेत्र पर अधिकार के लिए उसका दूसरा प्रयास भी असफल रहा।

पल्लव राजा नरसिंहवर्मन (ई. 630-668) ने वातापी राज्य पर 642 ई. में आस-पास कब्जा कर लिया था।

पुलकेशिन-द्वितीय 642 ई. के आसपास मारा गया।

चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय (ई. 733-745ईस्वी) के बारे में यह कहा जाता है की उसने कांची पर तीन बार अधिकार किया था. उसने 740 ई. में पल्लवों को पूरी तरह से पराजित कर दिया था।

H - अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य आक्रमण का वर्णन करें।

— अलाउद्दीन खिलजी के विजय अभियानों में अनेक महत्वपूर्ण सेनानायक थे, जिनकी से सैन्य आक्रमणों में सफलता प्राप्त की।

सेनानायक— उलूग खाँ, मलिक काफूर आदि

सैन्य अभियान—

1. गुजरात आक्रमण—

G - Write a short note on conflict between Pallavas and Chalukyas.

The main reason for the conflict between the Pallavas and Chalukyas of Badami was supremacy over throne, prestige and territorial resources. This struggle continued from the 6th century to 8th century. Later the Pandyas under control of Madurai and Tinnevely also joined this conflict. Both kingdoms put their efforts to establish supremacy over the rivers Krishna and Tungabhadra.

Important events during this conflict

- Pulakeshin-II (609-642) reached the capital of Pallava during this conflict.
- His second invasion for Pallava territory was a failure.
- Vatapi was captured by the Pallava king Narasimhavarman (A.D. 630-668) around 642 A.D.
- Pulakeshin II was killed around 642 A.D.
- The Chalukya king Vikramaditya II (A.D. 733-745) is said to have overrun Kanchi three times. In 740 A.D. he completely routed the Pallavas.

H - Describe the military invasion of Alluddin Khilji.

In 1296 A.D. Ala-ud-din Khilji succeeded Jalal-ud-din Firoz Khilji and ascended the throne.

Ala-ud-din Khilji Invasions in the North

- Ala-ud-din Khilji's generals namely, Ulugh Khan and Nusrat Khan conquered Gujarat.
- He captured Ranthambore and killed Hamir Deva its ruler in 1299 A.D.

- यहाँ के शासक रामकर्ण को पराजित किया।
- सोमनाथ मंदिर लूटा और (हिजड़ा) मलिक काफूर को खरीदा।
- 2. रणथंभौर आक्रमण—**
 - सेनानायक उलूग खाँ एवं नुसरत खाँ को भेजा।
 - राजा हम्मीर देव को पराजित किया।
- 3. मालवा अभियान—**
 - 1305 ई. में सैन्य शक्ति से मालवा के शासक महलक देव को पराजित किया।
 - दक्षिण भारत के सैन्य आक्रमण—
- 4. देवगिरि का आक्रमण—**
 - 1296 मते देवगिरि के शासक रामचन्द्र देव को पराजित किया।
- 5. वारंगल का आक्रमण—**
 - 1303 ई. के अजकल अभियान का बदला लेने के लिए 1309–10 ई. के बीच, रुद्रदेव को परास्त किया।

I- सल्तनत काल में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

- मध्यकालीन भारत में विशेष रूप से सल्तनत काल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति दयनीय रही है, सल्तनत कालीन भारतीय समाज में कुप्रथाएँ— जैसे— पर्दाप्रथा, दास प्रथा, देव दासी प्रथा इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त होती हैं।

लेकिन भारतीय सल्तनत काल में महिला मुस्लिम शासक हुई और पर्दा प्रथा का त्याग किया। इल्तुतमिश की पुत्री रजिया एक मात्र सल्तनत कालीन महिला शासक बनी।

लेकिन तुगलक वंश के शासक फिरोज शाह ने निर्धन महिलाओं व बच्चों की आर्थिक सहायता के लिए दिवान—ए—खैरात, दारूल—शफा जैसे विभागों की स्थापना की।

दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की स्थिति को देखते हुए कई सुधार कार्य भी किये परन्तु इनका ज्यादातर लाभ मुस्लिम महिलाओं को प्राप्त होता था।

इस प्रकार कि सल्तनत काल में अलग—अलग वंश में महिलाओं की स्थिति का स्वरूप अलग—अलग परिलक्षित होता है।

- Invasion of Chittor in 1303 A.D.
- He also captured Malwa, Dhar, Mandu, Ujjain, Marwar, Chanderi and Jalor.

Ala-ud-din Khilji Invasions in the South

- He was the first Sultan who attacked South India.
- He sent his confidante and general Malik Kafur against the rulers of the south.
- Prataparudra-II of Warangal, Ramachandra Deva, the Yadava king of Devagiri, and Veera Ballala-III the Hoysala king were defeated.
- He constructed a mosque in Rameswaram.
- The kingdoms of the south acknowledged the power of Ala-ud-din Khilji and paid his monetary tributes.

The Mongol Invasion

Ala-ud-din successfully resisted the Mongol invasion more than 12 times.

I- Throw light on women's position in the Sultanate Period.

There was little change in the position of women in the Hindu society. The old rules enjoying early marriage for girls, and the wife's obligation of service and devotion to husband continued. Annulment of the marriage was allowed in special circumstances, such as desertion wathsome disease, etc. But not all writers agree with this. Widow remarriage is included among the practices prohibited in the the The Kali age but this apparently applied to the upper caste only. Regarding the practice of Sati, some writers approve it empathetically while others allow it with some conditions. According to Ibn Battuta, permission from Sultan had to be taken for the performance of Sati. Regarding property, the commentator uphold that the widow was not merely Guardian of this property, but had the full right dispose of it. Thus, it would appear that property rights of women improved in the Hindu law. "During this period the practice of keeping keeping women in seclusion and practice of Parda become widespread among the upper class women. The Arabs and Turkish brought this Parda system into India and it become widespread among the Hindu women in the upper class of North India. The growth of

Parda has been attributed to the fear of Hindu women being captured by the Invaders.“ It affected women adversely and made them even more dependent on man.

J - बौद्ध और जैन धर्म में क्या समानताएं हैं।

– समानताएँ

1. दोनों धर्म के प्रवर्तक क्षत्रिय थें।
2. दोनों धर्म अनीश्वरवादी हैं। दूसरे शब्दों में दोनों धर्म संसार के सृष्टा के रूप में ईश्वर को नहीं मानते।
3. दोनों धर्म-कर्म का वैदिक सिद्धांत नहीं मानते।
4. दोनों धर्म वैदिक यज्ञ-विधान व कर्मकांड का विरोध करते हैं।
5. दोनों धर्मों ने जाति प्रथा व लिंग भेद की निंदा की।
6. दोनों धर्मों में उपदेश की भाषा जनभाषा (जैनधर्म-प्राकृत भाषा) जबकि बौद्ध धर्म-पालि भाषा है।

J - What are the similarities between Buddhism and Jainism.

Buddhism and Jainism were not related to each other as parent or child but rather children of common parent, born at different intervals, though at about the same period of time and marked by distinct characteristics, though possession a strong family of resemblances.

Similarities -

- (1) The source of both the religion is vedic religion and both are indebted to Upanishads
- (2) Both Gautam Buddha and Mahavir belonged to princely families and not to priestly families.
- (3) Both deny the existence of God.
- (4) Both denied the authority of the Vedas and the necessity of performing sacrifices and rituals.
- (5) Both have accepted the theories of Karma rebirth and Moksha.
- (6) Both taught in the language of the common people i.e. Prakrit and not in Sanskrit which was the language of the priests.
- (7) Both of them were opposed to animal sacrifices.
- (8) Both of them admitted disciples from all castes and from both sexes.
- (9) Ahimsa is the prominent principle of both the religions.
- (10) Both Buddhism and Jainism put stress on right conduct and right knowledge and not on religious ceremonial and ritual as the way to obtain salvation.
- (11) Both, the religions came as a sort of reform of Hindu religion.

K - विजयनगर साम्राज्य के नायंकर और अयंगर प्रणाली पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक व्यवस्थाएँ थी।

नायंकार व्यवस्था—

इस व्यवस्था में अमरनायक अमरम भूमि से राजस्व वसूल करता था एक सैन्य टुकड़ी रखता था। भूमि का प्रशासन देखता था। यह पद वंशानुगत नहीं था। नायंकरों पर नियंत्रण रखने के लिए अच्युतदेव राय ने इनके यहाँ महामण्डलेश्वर नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी।

आयंगर व्यवस्था—

K - Write a short note on Nayankar and Ayyangar System of Vijayanagar empire.

The ayagars and the Nayakara were the chief rulers in Vijayanagar Empire.

The ayagars were in charge of villages whereas the Nayakara were in charge of the districts.

FEATURES OF THE AYAGAR SYSTEM.

- 1.) The ayagars had the privilege to sell or mortgage their offices.

विजय नगर साम्राज्य के ग्रामीण प्रशासन से जुड़ी थी। ग्रामीण प्रशासन 12 अधिकारियों द्वारा संचालित किया जाता था, जिनका पद प्रायः वंशानुगत होता था। इनमें प्रमुख अधिकारी— सेनतेओवा निरुनिक्कर, महानायकाचार आदि थे।

— इनके समूहिक रूप से आयंगर कहा गया।

2.) Ayagars were granted tax free lands known as Munyams which they were supposed to enjoy in perpetuity of their services.

3.) Every village in ayagar system was a unit and its affairs were handled by a team of 12 functionaries together called ayagars.

FEATURES OF NAYAKARA

1.) The king was considered the owner of the soil and thus distributed soil to his Nayakas.

2.) Each Nayaka was in charge of a district.

3.) Nayaka enjoyed greater freedom in his district and there existed not a system of transfer from one district to another.

4.) It was a requirement that Nayakas maintain a sufficient number of troops for the king and serve them in his war.

5.) It was compulsory for Nayakas to pay fixed annual financial contribution to the imperial exchequer which in accordance to the chronicle of Naniz was generally half revenue.

L - मुगलों के पतन के कारण।

मुगल साम्राज्य के पतन हेतु अनेक कारण उत्तरदायी है।

मुख्य कारण—

- आयोग्य उत्तराधिकारी—मुगल साम्राज्य एकतांत्रिक था उसमें सम्राट का विशेष शक्तिशाली होना अनिवार्य था। औरंगजेब के बाद दुर्लभ सम्राटों का उदय हुआ।
- मुगल सरदारों में पारस्परिक द्वेष भाव।
- मराठो का शिवाजी के रूप में उत्कर्ष हुआ।
- शक्तिशाली सूबेदारों की महत्वाकांक्षा।
- मुगल सेना का अद्यः पतन।
- मुगल सम्राटों को व्यक्तित्व व चरित्र
- औरंगजेब की धार्मिक नीतियाँ एवं दक्षिण की नीति।
- विदेशी आक्रमणों का होना।
- यूरोपिय कंपनियों का आगमन व भारत में प्रवेश।

L - Causes for the decline of Mughals.

Causes of the decline of the Mughal Empire:

1. Wars of Succession:

The Mughals did not follow any law of succession like the law of primogeniture. Consequently, each time a ruler died, a war of succession between the brothers for the throne started. This weakened the Mughal Empire, especially after Aurangzeb. The nobles, by siding with one contender or the other, increased their own power.

2. Aurangzeb's Policies:

Aurangzeb failed to realise that the vast Mughal Empire depended on the willing support of the people. He lost the support of the Rajputs who had contributed greatly to the strength of the Empire. They had acted as pillars of support, but Aurangzeb's policy turned them to bitter foes. The wars with the Sikhs, the Marathas, the Jats and the Rajputs had drained the resources of the Mughal Empire.

3. Weak Successors of Aurangzeb:

The successors of Aurangzeb were weak and became victims of the intrigues and conspiracies of the faction-ridden nobles. They were inefficient generals and incapable of suppressing revolts. The absence of a strong ruler, an efficient bureaucracy and a capable army had made the Mughal Empire weak.

(13)

4. **Empty Treasury:**

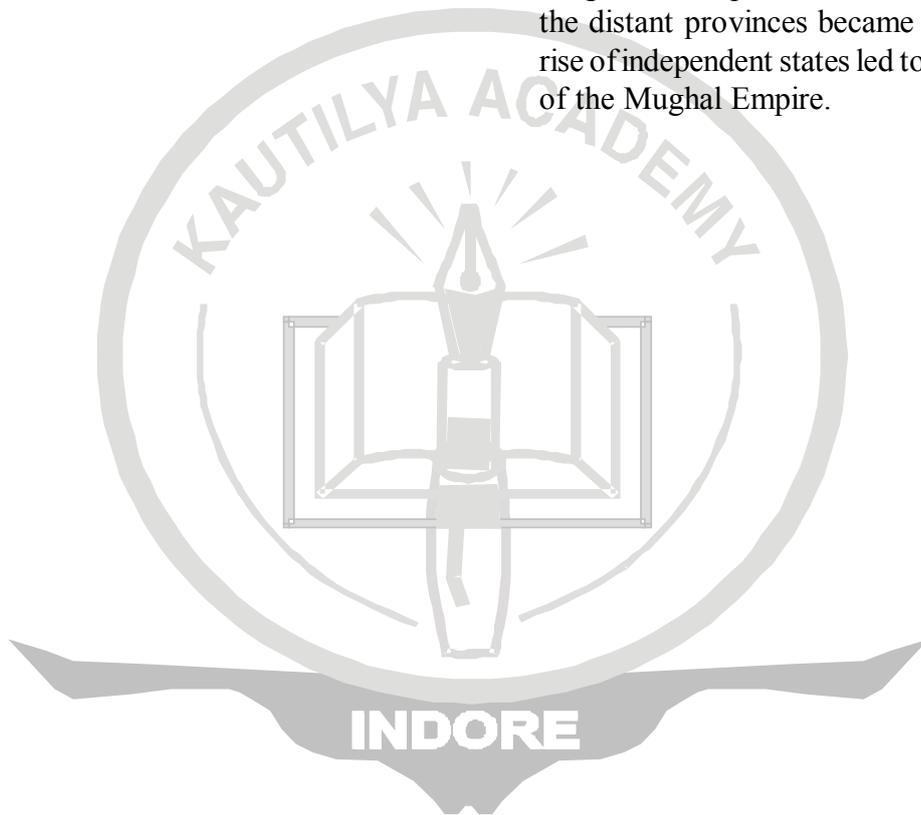
Shah Jahan's zeal for construction had depleted the treasury. Aurangzeb's long wars in the south had further drained the exchequer.

5. **Invasions:**

Foreign invasions sapped the remaining strength of the Mughals and hastened the process of disintegration. The invasions of Nadir Shah and Ahmad Shah Abdali resulted in further drainage of wealth. These invasions shook the very stability of the empire.

6. **Size of the Empire and Challenge from Regional Powers:**

The Mughal Empire had become too large to be controlled by any ruler from one centre i.e. Delhi. The Great Mughals were efficient and exercised control over ministers and army, but the later Mughals were poor administrators. As a result, the distant provinces became independent. The rise of independent states led to the disintegration of the Mughal Empire.



PART- A 15 Marks

A - 6 वीं शताब्दी ई.पू. के दौरान दूसरा शहरीकरण लोहे के परिचय के कारण था। चर्चा करें।

– नगरीकरण का शब्दिक अर्थ है ग्रामीण संस्कृति से भिन्न नगर सभ्यता का विकास भारत में शहरों का उदय हड़प्पाकाल से प्रारंभ हुआ तथा 500 ई.पू. में गंगाघाटी के मैदान में शहरों का उदय हुआ।

इस युग में लोहे के हथियारों के व्यापक इस्तेमाल से घने जंगलों को साफ किया गया। लोहे के इस्तेमाल से कछारी क्षेत्र में अभूत पूर्व उपज में वृद्धि हुई।

इस अधिशेष के द्वारा शहरों में रहने वाले शासकों पुरोहितों, शिल्पियों कारीगरों का भरण-पोषण किया जाने लगा।

शहरी का दूसरा प्रमुख कारण मुद्रा का प्रचलन हुआ। जिससे शिल्प उद्योग धंधों का विकास बढ़ा।

इस काल में विकसित होने वाले जैन बौद्ध धर्मों का दृष्टिकोण भी व्यापारियों एवं व्यवसाय के प्रति उदार था बुद्धिकाल में नगरों का तेजी से विकास हुआ। चंपा, राजगृह वाराणासी आदि।

बौद्ध काल सामान्य जन की आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि था लोहे के उपकरणों के अविष्कार ने गंगाघाटी में उत्पाद प्रक्रिया को काफी तीव्र कर दिया।

उत्तर भारत में व्यवसाय तथा उद्योग धंधे उत्थित विकसित हो चुके थे। जहाँ फर्नीचर तथा समुद्री जहाजों का निर्माण किया जाता था। धातु कर्मियों के लिए कम्मामार शब्द का प्रयोग हुआ है।

इस काल में आंतरिक व बाह्य दोनों ही व्यापार उन्नति पर था। जो उत्तर ओर दक्षिण के बीच होने वाले नियमित व्यापार को सूचित करते हैं।

16 महाजनपदों में अयोध्या, मथुरा, चम्पा व्यापारियों के आकर्षण के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। इससे मुद्रा का प्रचलन व धातुओं की उपयोगिता बढ़ी।

इसे दूसरा नगरीकरण इसलिए कहा जाता है क्योंकि हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद पहली बार 6वीं शताब्दी ई.पूर्व में बड़े संपन्न एवं विकसित नगरों का उल्लेख मिलता है। यह विकास क्रम लोहे के कारण तीव्र व संभव हो सका।

इस समय के महत्वपूर्ण नगरों में कौशाम्बी, श्रावस्ती अयोध्या, कपिलवस्तु, वाराणासी, वैशाली, राजगृह आदि। पुरातात्विक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक तथा शैक्षणिक सभी पक्षों का संयुक्त रूप से विकास हुआ।

A - The second Urbanisation during 6th Century B.C was due to the Introduction of Iron. Discuss.

Second urbanization refers to emergence of several janapadas and then 16 Mahajanapadas in Indian subcontinent somewhere around 500-600 BC. But before understanding second urbanization one must know about 1st urbanization or earliest known civilization in Indian subcontinent i.e Indus Valley Civilization.

IVC was an urban civilization ranging between 2500 BC to 1750 BC. IVC is known for its exceptional urban planning and unique water management / water harvesting system. Urban phase IVC started to decline after 1900 BC and declined completely around 1750 BC.

Another turn of history happens with the discovery of iron around 1000 BC. Iron helped to cut thick forest of northern India and use of iron tools enabled far more agricultural production. Surplus food production led to development of smaller urban settlements where food grain could be supplied from rural areas. This surplus production was collected by kings and stored for its military and administrative needs. Many such settlements started emerging around 500 BC which were known as janapadas. Later Mahajanapadas emerged with merger of many janapadas. Magadh, Vatsa, Kashi, Malla, Avanti were some of the important Mahajanapadas.

The widespread use of iron tools and weapons helped the formation of large territorial states. Some agrarian implements like sickles, hoes, axes etc. were to be associated with this period. Then from the later stage of Jakhara we have unearthed even an iron ploughshare. As we know with the use of iron implements, there was extension in arable land in middle

According to Buddhist texts there were 60 towns in Northern India during this period. Among them, 20 towns were as big as Sravasti and among them 6 towns were given the status of Metropolitan city. In this way, the emergence of second urbanisation was linked to the effective use of iron implements in the field of agriculture.

B - मुगलों के तहत वास्तुकला की वृद्धि का विस्तार से वर्णन करें।

— मुगल वास्तुकला इंडो-इस्लामिक स्थापत्य का अंतिम पड़ाव है जिसमें ईरानी तत्व, तूरानी तत्व, ट्रॉन्स औसियाना एवं तथा सल्तन कालीन तत्व भारतीय तत्व के साथ सम्मिलित हुए हैं

मुगल वास्तुकला में खुरदरें पत्थर, लाल पत्थर, संगमरमर तीनों का इस्तमाल हुआ है। भवन निर्माण में घुमावदार कोणदार और रंगीन मेहराब का इस्तेमाल मुगल कालीन वास्तुकला की पहचान है।

पित्रादूरा तकनीक मुगल वास्तुकला की अपनी विशेषता है। मुगल स्थापत्य में भव्यता, विशालता पर जितना ध्यान दिया गया उतना ध्यान सजावट, उलेकरण व बारीकियों पर भी दिया गया।

मुगल वास्तुकला का विकासक्रम है— शुरुआत— बाबर, विकास— अकबर चरम—शाहजहाँ तथा पतन— औरंगजेब।

बाबर काल—

- संभल की जामी मस्जिद
- मीर बाकी द्वारा अयोध्या की बाबरी मस्जिद तथा आगरा का रामबाग।

बाबर काल में शिल्पगत सौंदर्य की कमी भी किन्तु इसकी विशालता अद्भुत थी।

अकबर काल—

- इसके काल में हिन्दू मुस्लिम शैलियों का व्यापक समन्वय है।
- हुमायू का मकबरा, आगरा का किला, फतेहपुर जीकरी का किला बुलन्द दरवाजा, पंचमहल आदि का निर्माण करवाया।

जहाँगीर काल—

- जहाँगीर ने वास्तुकला की जगह चित्रकारी, बाग-बगीचों पर ध्यान दिया इसलिए इसका काल वास्तुकला का 'विश्राम काल' कहते हैं।
- अकबर का मकबरा (सिंकदरा)
- एतमादुद्दोला का मकबरा, जहाँगीर का मकबरा
- सिंकदरा स्थित मकबरे में हिंदू, मुस्लिम बौद्ध और ईसाई कलाओं का प्रभाव है।

शाहजहाँ का काल—

- इसके काल में मुगल वास्तुकला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
- इसके काल में मेहराब, गुंबद, मीनार परकोटा और बुर्ज

B - Describe the growth of Architecture under Mughals in detail.

Mughal architecture is the distinctive Indo-Islamic architectural style that developed in northern and central India under the patronage of Mughal emperors from the 16th to the 18th century. It is a remarkably symmetrical and decorative amalgam of Persian, Turkish, and Indian architecture.

The enormous wealth and power available with the great Mughals enabled them to construct buildings of supreme beauty and lay out extensive pleasure gardens and new cities.

Main features of Mughal Architecture:

1. Variety of buildings
2. Synthesis of Persian and Indian style
3. Costly decorations
4. During the Mughal period, buildings were constructed mostly of red sandstone and white marble.

Development of architecture under different Mughal rulers:

Babur and architecture:

Babur was not impressed by Indian architecture. At the same time he was busy waging wars. As Babur recorded in his 'Memories', he employed 680 workmen and 1491 stonecutters daily on his various buildings in India. He constructed several buildings but only two mosques—one at Panipat and the other at Sambhal have survived.

Humayun and architecture:

Humayun's troubled reign did not allow him enough opportunity to give full play to his artistic temperament. Even then he constructed the palace of 'Din-i-Panah' in Delhi which was probably destroyed by Sher Shah. Humayun constructed some mosques at Agra and Hissar.

Akbar and architecture:

The history of Mughal architecture really starts with Akbar. One of the earliest buildings built is the **Tomb of Humayun**, in Delhi. This splendid tomb, designed by a Persian Architect Malik Mirza Ghiyas and executed by Indian craftsmen and masons, is a fine example of the synthesis of Indian-Persian traditions.

Important buildings built during Akbar's time include the following:

- (1) Red Fort at Agra.
- (2) City of Fatehpur Sikri
- (3) Lahore fort,

(16)

- सभी आदर्श संतुलन में थे।
- आगरा का ताजमहल, दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद का निर्माण।
 - ताजमहल, डिजाइन और चार बाग शैली में यह हुँमायूँ के मकबरे से, औरंगजेब काल—
 - बादशाही मस्जिद (लाहौर) मोती मस्जिद (लाल किला) और राबिया-उद-दौरानी का मकबरा (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) इस काल की प्रमुख इमारते हैं।
 - राबिया-उद-दौरानी की याद में इसे 'दक्कन ताज' या बीबी का मकबरा' भी कहते हैं।

- (4) Tomb at Sikandra.
- During Akbar's time, it is said that about 500 beautiful buildings were constructed in the Red Fort at Agra but only a few of them now survive. Main features of Akbar's buildings are:
- (i) Synthesis of Hindu- Muslim art tradition
 - (ii) Extensive use of red stone
 - (iii) Construction of buildings for civilian purposes.

Jahangir and architecture:

Jahangir had fine artistic sense but he was more fond of painting than architecture. Two important buildings were raised. One was the completion of the Tomb of Akbar at Sikandra and the other was the Tomb of Itmad-ud-Daulah built by Nur Jahan over the grave of her father. The most important feature of this tomb is that it is decorated with 'pietra dura' i.e. in-laid with semi-precious stones of different colours.

Shah Jahan and architecture:

Shah Jahan's period is usually called the 'Golden Age of Mughal Architecture' and he is given the title of 'Prince among the Builders' and 'Engineer King'. His most important and impressive buildings are the Taj Mahal, Red Fort and Jama Masjid. These buildings are extremely beautiful and soft.

Shah Jahan mostly made use of marble in place of red stone. With a view to enhance the beauty and effect of the ceilings, he made full use of gold, silver, precious and coloured stones. At several places, the pictures of trees, animal scenes and other flora and fauna have been depicted.

Important buildings constructed by Shah Jahan -

1. Taj Mahal
2. Moti Masjid
3. Jama Masjid
4. Red fort and some important building in it such as Diwan- Khas , Rang Mahal.
5. Other architecture beauty pieces are Peacock Throne, Gardens such as Shalimar garden , Wazir Bagh Garden etc.

Aurangzeb and architecture:

Aurangzeb's accession to the throne marks the end of rich harvest in building art. His puritanism gave little encouragement to the development of art. He built the Shahi Masjid at Lahore.

C - अशोक महान क्यों कहलाता है ।

— मोर्य वंश का चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अखण्ड भारत पर राज्य किया तथा मोर्य साम्राज्य उत्तर में हिन्दु कुश की श्रेणियों से दक्षिण में गोदावरी नदी तक तथा पूर्व में बंगाल से पश्चिम में अफगानिस्तान ईरान तक पहुँचाया था।

अशोक ने बेहतर कुशल प्रशासन तथा धार्मिक सहिष्णुता का पश्चिम दिया। सम्राट अशोक प्रेम, सत्य, अहिंसा एवं शाकाहारी जीवन प्रणाली के समर्थक थे।

अशोक के विषय में जानकारी उसके द्वारा निर्मित शिलालेख व स्तम्भ लेखों से प्राप्त होती हैं।

— शासनदेशों को शिलाओं पर खुदवाने वाला प्रथम भारतीय शासक अशोक था। जिससे शिलालेखों का भी जनक कहाँ जाता है।

— अशोक ने अपने राज्यभिषेक के 8 वर्ष बाद अर्थात् 9 वें वर्ष कलिंग की विजय की इसका उल्लेख 13 वें शिलालेख में मिलता है।

कल्हण की राजतरंगिणी से ज्ञात होता है कि श्रीनगर व नेपाल देवे पत्तन नामक नगर बसाये।

— अशोक पहले शैव धर्म का उपासक था बाद में उप गुप्त नामक बौद्ध भिक्षु से बौद्ध धर्म की शिक्षा ली।

अशोक ने भेरी घोष के स्थान पर धम्म घोष को अपनाया तथा दिग्विजय नीतियों के स्थान पर धर्मविजय नीति के लिए प्रेरित किया।

स्थापत्य में साँची का बौद्ध स्तूप, चैत्यों का निर्माण बराबर की पहाड़ियों में कार्ले चैत्य गृह का निर्माण करवाया जो धार्मिक सहिष्णुता को प्रदर्शित करता है।

— अशोक ने पशु हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया।

— समाज कल्याण संबंधी कार्य किये औषधालय आदि

— धम्म महामात्यों की नियुक्ति की।

— अशोक के समय तक्षशिला, उज्जैन, वाराणासी शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।

उपरोक्त बिन्दुओं से ज्ञात होता है कि अशोक के प्रजाहितैषी कार्य व धार्मिक सहिष्णुता तथा लोक कल्याण के कार्यों ने उसे महान बनाया है निःसंदेह रूप से अशोक एक महान शासक कहलाता है।

The Mughal period saw an outburst of cultural activity in the fields of architecture, painting, music and literature. The norms and traditions created during this period set standards which deeply influenced the succeeding generations.

C - Why Ashoka is called Great.

One of the greatest emperors known to Indian history, Ashoka, was the grandson of Chandragupta Maurya and the son of Bindusara. The land he ruled stretched from the Himalayas, Nepal and Kashmir to Mysore in the South. From Afghanistan in the N.E. to the banks of the River Brahmaputra in the East. In the West his territory covered Saurashtra and Junagarh.

Ashoka was called as Ashoka the great because of the following reasons:

His actions in the administration and management of State reflect piety, love, magnanimity, high moral discipline and ethical conduct in his personal as well as public life.

He organized a system of government, efficient, humane and responsive to public weal, unparalleled in human history.

The record of his administration chiseled on the rocks in the different parts of his empire, on the highways and hills, caves and public places enshrines the noblest sentiments of a man who loved his people like his own children, respected all sects and religious faiths and instilled confidence in the neighboring countries for peace and concord.

To a great extent, Ashoka the Great made justified contributions to the art as well as architecture. He built stupas at Sanchi, Sarnath, Deor, Bharhut, Butkara, Kothar, etc. He also made significant contributions to the Nalanda University and Mahabodhi temples.

Ashoka was named to be a unique ruler as he was the first ruler who tried to take forward his message to people through inscriptions wherein he described his change in belief and thought after the Kalinga War.

Ashoka opened charitable hospitals and dispensaries for the welfare of the poor. He planted trees to provide shade and opened inns for the shelter of travelers and laid out green parks and gardens to beautify his kingdom. Wells and tanks were also constructed for the benefit of his people.

He believed in non-violence and so he banned the sacrifice of animals. Besides this he opened clinics for birds and animals too. Not only this, Ashoka the Great also sent messengers to other lands like Egypt, Syria, Greece and Sri Lanka focused specifically spread ideas about Dhamma. He was a great ruler who transformed from a strong military leader into a benevolent ruler who spread his great ideas not just in his empire but in many other countries. His message is so universal and so great that many historians call him 'Great'.

D - जाँच करें कि सिंधु घाटी सभ्यता उस अवधि के दौरान पनप रही अन्य सभ्यता से कैसे अलग थी।

- सिंधु घाटी सभ्यता हड़प्पा सभ्यता का काल 2500 ई. पू. से 1750 ई.पू. तक माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता, एक नागरीय सभ्यता थी जो विश्व की अन्य सभ्यताओं के समकालीन थी। भारत में इसकी खुदाई से लगभग 1500 स्थलों की खोज से लगभग 1500 स्थलों की खोज हुई है जिससे विश्व की अन्य सभ्यताओं के अवशेषों से मिलाने पर ज्ञात होता है।
- कि सिंधुघाटी सभ्यता उस अवधि के दौरान पनप रही थी।
- निम्नलिखित बिन्दुओं से सिंधु घाटी सभ्यता, अन्य सभ्यता से अलग थी—
- 1. सिंधु नदी के आस-पास का क्षेत्र था।
- मेसोपोटामिया, मिस नील नदी के आस-पास विकसित हुई।
- सिंधुघाटी सभ्यता कौस्ययुगीन सभ्यता थी।
- जबकि चीनी सभ्यता था अन्य के ऐसे साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।
- स्थलों व व्यापार में प्रचलित मुहरो में भिन्नता के आधार पर।
- हड़प्पा सभ्यता में मंदिरों के साक्ष्य नहीं मिले जबकि मेसोपोटामिया सभ्यता में मंदिरों के साक्ष्य मिले।
- हड़प्पा में चित्राक्षर लिपि जबकि मेसोपोटामिया सभ्यता कीलनुमा लिपि का प्रयोग किया जाता था।
- दोनों सभ्यता के मृदभाड़, आकार, प्रकार एवं संरचना में पर्याप्त अन्तर हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के भवन प्रायः पक्की ईंटों के जबकि मेसोपोटामिया में प्रायः कच्ची ईंटों का प्रयोग किया जाता था।
- दोनों के नगरीकरण में पर्याप्त अन्तर था। हड़प्पा के

D - Examine how Indus Valley civilisation was distinct from the other civilisations that flourished during that period.

Mesopotamia and the Indus Valley Civilization are oldest civilizations of the world, There was a time when these civilizations prospered and lived with glory, but as time changes its course and these civilizations disappeared but left its signs, instead of lot of similarities these two civilizations had some contrasting features which are as follows:-

Geographical extent: The area covered by the Harappan civilisation was much much bigger than that of the Egyptian and the Mesopotamian civilisations. Though the political nature of the state of IVC is not exactly known, whether it was a single centralised state or just a no. of states with some sort of cultural homogeneity, the region of the Harappan culture elements covered a region comparable to the size of modern day Pakistan.

Economies

Both civilization had traded with each other because there were Indus valley civilization's seals found in mesopotamia at the time of excavation, Mesopotamian were exporter of food grains & textiles and harappa were exporter of copper, gold and ivory made handicrafts products

Architecture: If the Egyptian and Mesopotamian cities had monumental structures, such structures were missing in Harappa. On the other hand, the Harappan cities were very well designed with

drainage systems, toilets etc, though the claims of things like streets that ran perpendicular to each other is seen now increasingly with aberrations. The IVC cities, at least the main ones

नगर अधिक विकसित व व्यवस्थित थे।
इस प्रकार सिंधुघाटी सभ्यता उस अवधि के दौरान
पनप रही थी जबकि अन्य सभ्यताएँ मिटती जा रही
थी।

used burnt bricks on a large scale while
Mesopotamians used them to a lesser extent and
in Egypt it was unknown.

Religion:

Mesopotamians worshipped the gods in Temples
there was a huge emphasis on the designing and
beautification of the Temples where as the
Harappan people ignored this constructions.

Because harappan inscriptions are not yet fully
deciphered we know very little about their
religion but still it indicates that both the
civilization were following the polytheistic
religion.

Claims are being made for many structures, but
historians and archaeologists have not agreed
upon these views over their use as places of
worship.

Hygiene

While in all other contemporary civilizations you
could not find any hygienic facilities for toilet,
drinking water, sewage disposal; Indus valley
civilization contained most evolved structure for
those types of activities.

Politics: We have much information regarding
the political histories of Egypt and Mesopotamia
from their inscriptions and written accounts. But
as the Harappan script is yet to be deciphered,
no clear idea of the polity is established compared
to its counterparts in West Asia and Africa. Also
it seems that the elements of war in Harappan
cities is far less compared to that of other
cities, showing they enjoyed larger periods of
stability than the other two. Mesopotamians
society clearly ruled by a king where as the Indus
society was not ruled by a King may be by a
village head or others.

In Mesopotamias there is clear evidence of wars
and expeditions into the other territories but the
Indus people are peace loving people and there
was no evidence of any war tools and
instruments.

PART- B

A - बारबोस-

- पुर्ताली यात्री एडवर्डो बारबोस था
- विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय के शासनकाल में यात्रा की थी।

B - सन्यासी विद्रोह- (1963-1800)

क्षेत्र- बंगाल व बिहार

नेतृत्व- मजूनशाह, अन्य नेता-मंजरशाह, हिन्दू महिला-भवानी पाठक, देवी चौधरानी

यह विद्रोह एक सामाजिक धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायियों, जिन्हें संन्यासी कहा जाता था।

C- लियोनार्डो दा विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग का नाम बताइए।

- पुर्नजागरण कालीन प्रसिद्ध, चित्रकार, कलाकार लियोनार्डो विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग- मोनालिसा (ला जोकोण्डा) है। जिसकी मुस्कान, का रहस्य आज भी शोध का विषय बना हुआ है।

D - तुष्टीकरण की नीति-

- तुष्टीकरण से आशय ऐसी राजनायिक नीति जो किसी दूसरी शक्ति को नजरअंदाज कर, विपक्षी शक्ति को पराजित करना।
- जैसे- ब्रिटेन ने द्वितीय विश्वयुद्ध में सोवियत संघ को रोकने हेतु, फासीवादी व नाजीवादी शक्तियों से युद्ध से बचना चाहता था।

E - निऊली की संधि- (27 नवम्बर 1919 ई.)

- प्रथम विश्व युद्ध में पराजित देशों पर लागू की जाने वाली 'शांति की शर्तों' का निर्माण हुआ। पेरिस शांति सम्मलेन- 1919 के पश्चात्- न्यूइली संधि से बुल्गारियों से थ्रेस यूनान तथा छोटे प्रदेश यूगोस्लाविया को देना पड़ा। इसकी सैन्य संख्या 20,000 कर दी गई और क्षतिपूर्ति रकम थोपी गई।

F - काकोरी घटना- (9 अगस्त 1925)

- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के क्रांतिकारियों ने 9 अगस्त 1925 को सहारनपुर- लखनऊ लाइन पर, काकोरी के निकट ट्रेन को लूटा था।
- क्रांतिकारी- रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला,

A - Barbosa

Duarte Barbosa was a Portuguese traveller.
Period: (1500-1516 A.D.)

He has given a brief description of the government and the people of Vijayanagar Empire.

B - Sanyasi Vidroh

The Sannyasi rebellion or Sannyasi Revolt (1770-1820) were the activities of sannyasis and fakirs in Bengal against the East India Company rule in the late 18th century. It took place around Murshidabad and Baikunthpur forests of Jalpaiguri.

The novel 'Aanand Math' is based on this Revolt.

C - Name the famous painting of Leonardo da Vinci.

Mona Lisa, The Last Supper, Salvator Mundi, Self Portrait .

D - Policy of appeasement

Policy of Appeasement is a diplomatic policy of making political or material concessions to an enemy power in order to avoid conflict. Such as policy was adopted by Britain and France with respect to growing powers in Germany and Italy.

E - Treaty of Neuilly.

Treaty of Neuilly, (Nov. 27, 1919), peace treaty between Bulgaria and the victorious Allied powers after World War I that became effective Aug. 9, 1920. Under its terms Bulgaria was forced to cede lands to Yugoslavia and Greece (thus depriving it of an outlet to the Aegean) involving the transfer of some 300,000 people; to reduce its army to 20,000 men;

F - Kakori Incident

Kakori Train Conspiracy was political robbery and the incident that took place at the small town Karori which was only 16 km away from Lucknow on 9 August, 1925.

The robbery was organised by revolutionary organisation i.e., Hindustan Republican

रोशनलाल व राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी दी।

G - कायथा—

- म.प्र. के कालीसिंध नदी के किनारे उपस्थित एक शहर है।
- यह ताम्रपाषणयुगीन सभ्यता को मुख्य स्थल है।
- यह सिंधु सभ्यता का भाग है।
- कायथा, मालवा संस्कृति का ही एक भाग है।

H - कलगी तुर्रा—

- म.प्र. के निमाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक गायन शैली है।
- यह रात्रि के समय शिव की आराधना में गाया जाता है।
- कलगी व तुर्रा नाम के अरवाड़ा होते हैं।
- अखाड़ा के गुरु को उस्ताद कहाँ जाता है।

I - अलाउद्दीन खान

- म.प्र. के प्रसिद्ध सरोद वादक थे।
- मैहर वाद्य (बैंड) की स्थापना की।
- म.प्र. सांस्कृतिक विभाग द्वारा प्रतिवर्ष इनके सम्मान में, मैहर में अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह आयोजित किया जाता है।
- इनके निवास स्थल मदीना भवन को संगीत की तीर्थ स्थली के रूप में जाना जाता है।

J - गिलोटिन

- गिलोटिन एक यंत्र है।
- इससे व्यक्ति को मृत्युदण्ड मिलने पर सिर कौट दिया जाता है।
- फ्रांसीसी क्रांति में रॉबिस्कयर ने एबर्ट तथा अन्य विरोधियों को गिलोटिन पर चढ़ा दिया था।

K - बालकृष्ण शर्मा नवीन

- म.प्र. के प्रसिद्ध आधुनिक साहित्यकार थे।
- जन्म— दिसम्बर, 1897 शाजापुर (म.प्र.)

Association (HRA) under the leadership of Ram Prasad Bismil.

G - Kaytha

Kaytha or Kayatha is a village and an archaeological site in the Ujjain district of Madhya Pradesh, India.

Excavations conducted by V. S. Wakankar (1965–66), and by M. K. Dhavalikar and Z. D. Ansari (1968) revealed layers from five different periods.

The Kayatha culture represents the earliest known agriculture settlement in the present-day Malwa region. It also featured advanced copper metallurgy and stone blade industry.

H - Kalgi Turra

This is a competitive style of folk song. Kalgi turra is sung all night on beats of the 'chang'. It comprises two groups. Songs are sung in question answer form and themes include poems, stories from the Mahabharata and the Puranas, contemporary context, etc. There is a spiritual aspect of kalgi turra as well—kalgi group tries to prove shakti as superior while turra group tries to prove shiv as more superior. Main ustaads are: Sumer Singh Suman (from Gogavan) and Mansaram (from Kasrawad).

I - Allauddin Khan

Allauddin Khan was a renowned classical musician of India. He played the sarod. He became the court musician of the Maharaja of Maihar. Allauddin Khan was bestowed with the Sangeet Natak Academy Award in 1952, the Padma Bhushan 1958 and the Padma Vibhushan in 1971.

J - Guillotine

Guillotine is an apparatus designed for efficiently carrying out executions by beheading. The device is best known for its use in France, in particular during the French Revolution, where it was celebrated as the people's avenger by supporters of the Revolution and vilified as the pre-eminent symbol of the Reign of Terror by opponents.

K - Balkrishna Sharma 'Naveen'

Bal Krishna Sharma was an Indian freedom activist, journalist, politician and a poet of Hindi

- रचनाएँ— उर्मिला (महाकाव्य), रश्मि रेखा, कुमकुम
- वर्ष— 1955 में राजभाषा आयोग के सदस्य रहे।

L - लाहौर कांग्रेस सत्र (1929)

- कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन, 31 दिसम्बर 1929 ई. को, रावी नदी के तट भारतीय तिरंगा फहराया।
- अध्यक्षता— पं. जवाहरलाल नेहरू
- पूर्ण स्वराज की माँग की।
- यही निश्चित किया कि 26 जनवरी को पूर्ण स्वाधीनता दिवस मनाया जाएगा।

M - प्रथम विश्व युद्ध किनके बीच लड़ा गया।

प्रथम विश्व युद्ध— 28 जून 1914 से 11 नवंबर, 1918 ई. तक चला।

मध्य हुआ— मित्र राष्ट्र— जापान, फ्रांस, अमेरिका, इंग्लैण्ड
धुरी राष्ट्र— जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी
इस युद्ध में विश्व के लगभग 37 देशों ने भाग लिया था।

N - ट्रायल—

- आजाद हिंद फौज के सैनिकों व अधिकारियों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा नवम्बर 1945 ई. में दिल्ली के लाल किले पर मुकदमा चलाया।
- प्रथम ट्रायल— अभियुक्त— 1. मेजर शहनवाज 2. कर्नल— प्रेम सहगल 3. कर्नल गुरुदयाल सिंह दिल्ली थे।
- लार्ड वेबेल ने — मृत्युदण्ड को माफ कर दिया था।

O - मुल्ला रामूजी

- म.प्र. के प्रसिद्ध साहित्यकार थे।
- गुलाबी उर्दू शैली के जन्मदाता एवं प्रसिद्ध शायर थे।
- जन्म— वर्ष— 1896 भोपाल में
- रचनाएँ — लाठी और भैंस
 - गुलाबी शायरी, जिंदगी
 - मीकालात गुलाबी उर्दू

literature born on 8 December 1897 at Bhayana, a small village in Shajapur district. His poetry anthologies include Kumkum, Rashmirekha, Apalak, Kwasi, Vinoba Stavan, Urmila and Hum Vishpae Janam Ke.

L - Lahore Congress Session

Lahore Congress Session was held in 1929. Jawaharlal Nehru was elected as president. Major Decisions taken - As per the Poorna Swaraj resolution passed at the Lahore Congress the word Swaraj in the Congress Constitution would mean complete independence. Round Table Conference decided to be held in London would be boycotted.

M - World War I fought between.

World War I was fought between the Allied Powers and the Central Powers. The main members of the Allied Powers were France, Russia, and Britain. The United States also fought on the side of the Allies after 1917. The main members of the Central Powers were Germany, Austria-Hungary, the Ottoman Empire, and Bulgaria.

N - INA TRIAL

The INA trials, which are also called the Red Fort trials, were the British Indian trial by courts-martial of a number of officers of the Indian National Army (INA) between November 1945 and May 1946, for charges variously for treason, torture, murder and abetment to murder during World War II.

The first of these was the joint court-martial of Colonel Prem Sahgal, Colonel Gurubaksh Singh Dhillon and Major General Shah Nawaz Khan.

O - Mulla Ramuji.

Mohd Siddiqui Mulla Ramuji was born in 1896 in Bhopal. His first book was **Gulabi Urdu** which became famous for his new style. In the world of Urdu literature, Bhopal got a place in the country because of him only. Urdu academy of MP has been named after him. His main literary works are Intekhab Gulabi Urdu, Kwatin Angura, Shadi, Aurat Zat .

PART- B 6 Marks

A - 1688 की गौरवशाली क्रांति के महत्व का मूल्यांकन करें।

1688 की गौरवशाली क्रांति के महत्व का मूल्यांकन—

- 1688 ई. में इंग्लैण्ड में शासकों का परिवर्तन बिना रक्त की बूंद बहाए संपन्न हो गया, इसलिए इसे गौरवशाली क्रांति कहते हैं—

महत्व—

- संसद ने बिल ऑफ राइट्स पारित कर सर्वोच्चता स्थापित की।
 - राजा के विशेषाधिकारों को समाप्त कर सेना पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया।
 - गृह और विदेशी नीति पर संसद की सर्वोच्चता स्थापित हुई।
 - इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर कैथोलिक आसानी नहीं हो सकेगा।
 - यूरोप की राजनीति पर, इस क्रांति का सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
 - इस क्रांति के परिणाम स्वरूप अमेरिकी क्रांति की पृष्ठ भूमि तैयार की।
- इस प्रकार इंग्लैण्ड की गौरवशाली क्रांति का न केवल इंग्लैण्ड, बल्कि यूरोप के अन्य देशों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा।

B - जबलपुर झंडा सत्याग्रह (1923) पर प्रकाश डालें।

- मध्यप्रदेश के जबलपुर में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मार्च 1923 में जबलपुर में तिरंगा झण्डा फहराने पर विवाद हुआ, कांग्रेस सदस्यों द्वारा 8 मार्च 1923 को झण्डा फहराने के सदस्य ब्रिटिश कमिश्नर ने रोक लगा दी।
- इसकी अवहेलना करते हुए कांग्रेस समिति ने सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया। जिसका नेतृत्व, सुंदरलाल शर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी ने किया था।
- सत्याग्रहियों पर मुकदमा चला जिसमें सुन्दरलाल शर्मा को 6 माह का कारावास हुआ।
- 18 अगस्त 1923 को ब्रिटिश अधिकारियों ने राष्ट्रीय ध्वज के साथ स्वयंसेवकों को जुलूस निकालने की अनुमति दी। जुलूस का नेतृत्व माखनलाल चतुर्वेदी वल्लभ भाई पटेल तथा बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने किया।

A - Evaluate the significance of Glorious Revolution of 1688.

Glorious Revolution, also called Revolution of 1688 or Bloodless Revolution, in English history, the events of 1688–89 that resulted in the deposition of James II and the accession of his daughter Mary II and her husband, William III, prince of Orange and stadtholder of the Netherlands.

Glorious Revolution was one of the most important events leading to Britain's transformation from an absolute monarchy to a constitutional monarchy. After this event, the monarchy in England would never hold absolute power again.

With the Bill of Rights, the regent's power was defined, written down and limited for the first time. Parliament's function and influence changed dramatically in the years following the revolution.

The event also had an impact on the 13 colonies in North America. The colonists were temporarily freed of strict, anti-Puritan laws after King James was overthrown.

Since the Glorious Revolution, Parliament's power in Britain has continued to increase, while the monarchy's influence has waned. There's no doubt this important event helped set the stage for the United Kingdom's present-day political system and government.

B - Throw light on the Jabalpur Jhanda Satyagraha (1923).

Flag Satyagraha is a campaign of peaceful civil disobedience during the Indian independence movement that focused on exercising the right and freedom to hoist the nationalist flag and challenge the legitimacy of the British Rule in India through the defiance of laws prohibiting the hoisting of nationalist flags and restricting civil freedoms.

With the observance of the All India Flag Day on June 18, 1923, the Jhanda Satyagraha assumed national complexion with Nagpur as its headquarters and "Nagpur Chalo" as its slogan. The flag satyagraha of Nagpur and Jabalpur occurred over several months in 1923. The arrest of nationalist protests demanding the right to hoist the flag caused an outcry across India

especially as Gandhi had recently been arrested. Nationalist leaders such as Sardar Vallabhbhai Patel, Jammalal Bajaj, Chakravarthi Rajagopalachari, Dr. Rajendra Prasad and Vinoba Bhave organised the revolt and thousands of people from different regions including as far south as the Princely state of Travancore traveled to Nagpur and other parts of the Central Provinces (now in Maharashtra and Madhya Pradesh) to participate in civil disobedience. In the end, the British negotiated an agreement with Patel and other Congress leaders permitting the protestors to conduct their march unhindered and obtaining the release of all those arrested.

C - ईश्वर चंद्र विद्यासागर पर एक टिप्पणी लिखिये।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर (1820–1891)

19 वीं शताब्दी के समाज सुधारकों में ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने शैक्षिक सुधार, सामाजिक सुधार व महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु सराहनीय योगदान दिया। उनका मत था कि बालिकाओं की शिक्षा से ही समाज में फैली रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और कुरीतियाँ दूर की जा सकती हैं। ईश्वरचंद्र विद्यासागर 'ब्रह्म समाज' नामक संस्था के सदस्य थे। स्त्री शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने विधवा-विवाह व विधवाओं की दशा सुधारने हेतु भी कार्य किया।

उनके अथक प्रयासों से 'विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856' पारित किया गया। बाल्य जीवन में मेधावी छात्र होने के नाते इन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि से सम्मानित किया गया। बंगाल में उन्होंने स्त्री शिक्षा की दिशा में सुधार हेतु लगभग 35 स्कूलों की स्थापना की।

C - Write a short note on Ishwar Chandra Vidyasagar.

Ishwar Chandra was born on 26th September, 1820 in Birsingha, Ghatak in Bengal Presidency in British India. He belonged to a poor Hindu Brahmin family. He had an impeccable thirst for learning. He studied dedicatedly and performed exceedingly well in academics. He received scholarships that helped him to continue further studies. He studied at the Sanskrit College and qualified in different subjects including Sanskrit Grammar, Dialectics and Literature among others.

Ishwar Chandra started working at Fort William College as the Head of Sanskrit Department at the age of 21 years. Later, he joined the Government Sanskrit College as Assistant Secretary.

Ishwar Chandra was appreciated for his knowledge and wisdom. He was awarded the title, Vidyasagar that literally means ocean of wisdom.

He believed in the power of education and was a living proof of the same. He opened many schools, especially to encourage girl education. He also worked hard to improve the condition of widows in the society. He fought hard to introduce the practice of widow remarriage. He won many accolades for his contribution to the society. Many places in India, especially in Bengal have been named after him.

Ishwar Chandra spent the last 20 years of his life amid Santhals at Nandan Kanan located in Jharkhand. He died in Kolkata on 29th July, 1891 at the age of 70.

D - राष्ट्र संघ क्या था? इसके उद्देश्यों और इसकी विफलता का कारण बताएं।

— प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त 10 जनवरी 1920 को राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति, सद्भावना स्थापित करने की शीर्ष संस्था थी।

उद्देश्य—

राष्ट्र संघ प्रमुख उद्देश्य, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना में वृद्धि करना। अंतर्राष्ट्रीय शांति को बनाए रखना। युद्ध के कारणों को समाप्त करना था।

विफलता के कारण—

- वर्साय की संधि से सम्बद्ध होना।
- संगठन में अनेक दोष होना।
- राष्ट्र संघ के सिद्धांतों में पराजित राष्ट्रों का अविश्वास का होना।
- संघ के प्रति अलग-अलग राष्ट्रों का दृष्टि कोण होना।
- संयुक्त राज्य अमेरिका का संघ का सदस्य नहीं होना।
- राष्ट्र संघ के पास स्थायी सेना का अभाव था।

E - यूरोप में पुनर्जागरण के कारण क्या थे।

— पुनर्जागरण का सूत्रपात यूरोप के इटली में हुआ, लेकिन इसका प्रसार लगभग सम्पूर्ण यूरोप राष्ट्रों पर था।

— **भौगोलिक स्थिति—** यूरोप की भौगोलिक स्थिति भू-मध्य सागर, अटलांटिक एवं एशिया से जुड़ा होना।

— **व्यापारिक समृद्ध—** यूरोप का अरब व एशिया से व्यापार होता था जिससे, ज्ञान, विज्ञान का आदान-प्रदान हुआ।

D - What was league of nation. Describe its aim and objectives and reason for its failure.

League of Nation (LN or LoN) was the first worldwide intergovernmental organisation whose principal mission was to maintain world peace. It was founded on 10 January 1920 following the Paris Peace Conference that ended the First World War.

Aims & objectives:-

- 1) Prohibition on secret treaties or alliances between states.
- 2) Discouraging member states from maintaining large armies, warships and destructive weapons.
- 3) Respect among the states for each other's independence and sovereignty.
- 4) Referral of disputes by the member states to the League of Nations and peaceful settlements of the same.
- 5) Corrective action by League of Nations members states against any single state or a group of states disturbing world peace and order.
- 6) Promotion of cultural, social and economic cooperation among the member states.

Reason for failure:

- 1) Absence Of Great Powers - USA didn't join LoN. USSR was expelled & Japan, Germany & Brazil withdrew from it. Many small & isolated sovereign nations never showed any interest in it.
- 2) Domination Of France and England made other nations feel they don't have authority here.
- 3) Rise of dictatorship - it couldn't prevent Hitler's rise & conquest which created distrust in LoN.
- 4) Constitutional defects & Limitations Of Legal Methods - to take steps against any Nation the decision must be unanimous. If failed things were no different than the original.
- 5) Narrow nationalism & lack of mutual cooperation.

E - What were the reason of Renaissance in Europe.

The Renaissance was a fervent period of European cultural, artistic, political and economic "rebirth" following the Middle Ages. Generally described as taking place from the 14th century to the 17th century, the Renaissance promoted the rediscovery of classical philosophy, literature and art.

- 1) Decline of feudalism - the rise of the middle class comprising of traders and businessmen caused

- कुस्तुनतुनिया का पतन- 1453 ई. पर तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया, जिससे नवीन व्यापारिक मार्गों की खोज की गई।
 - धर्मयुद्ध- ईसाईयों का प्रसिद्ध धर्मस्थल जेरुसलम पर अरबों ने अधिकार कर लिया था।
 - भौगोलिक खोजे- यूरोप वासीयों ने, नवीन जलमार्गों की खोज कर, अमेरिका, भारत की खोज की।
 - तकनीकी अविष्कार- यूरोपवासियों ने, कागज के लिए, प्रिंटिंग प्रेस का अविष्कार किया।
- उदारवादी समाज- यूरोप का समाज उदार वादी व प्रगतिशील था।
- उपरोक्त कारणों से यूरोप में पुर्नजागरण हुआ।

this. These middle classes provided the kings necessary money for the maintenance of armies and thereby enabled them to reduce their dependence on the feudal lords.

- 2) Crusades & Voyage - As a result of the Crusades the Western scholars came in contact with the East which was more civilized and polished than the Christians. A number of Western scholars went to the universities of Cairo, Kufa and Cardona etc and learnt many new ideas, which they subsequently spread in Europe
- 3) The Church which once dominated suffered a setback in the 13th and 14th centuries. The temporal power of the Church was challenged by a number of strong monarchs. In 1296 A.D. King Philip IV of France got the Pope arrested and made him a prisoner.
- 4) Patrons - Kings like Francis I of France , Henry VIII of England, Charles V of Spain and many newly rich families like Medichi provided security and protection to the artists and encour-agement. With a view to attain refine-ment in every aspect of their culture, these wealthy classes tried to learn new & started spreading that.
- 5) Fall of Constantinople - Ancient yet advance knowledge spread in Europe due to Turkish invasion. Scholars fled Constantinople & took books & scriptures with them.
- 6) Invention of the printing press - in 1454 by Gutenberg of Mainz also greatly assisted in the revival of learning. Soon thereafter a number of printers appeared in Italy. The printing press was introduced in England by Caxton in 1477.

F - द्वितीय विश्व युद्ध का मूल कारण 1919 की वर्साय की संधि से पता लगाया जा सकता है। इस कथन का गंभीर रूप से मूल्यांकन करें।

- द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ 1 सितम्बर 1939 ई. में जर्मनी द्वारा पौलेण्ड पर आक्रमण के साथ हुआ, जबकि इसका अंत 1945 ई. को हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध हेतु उत्तरदायी कारणों में मूल कारण वर्साय की संधि को केवल माना ज्यादा उचित प्रतीत नहीं होता, बल्कि सर्वप्रमुख कारणों में मुख्य कारण माना जा सकता है-

मूल्यांकन-

वर्साय की संधि की शर्तें इतनी कठोर एवं अपमानजनक थीं की स्वाभी मानी राष्ट्र लम्बे समय तक इसे स्वीकार

F - **The root cause of World War II can be traced to the Treaty of Versailles of 1919. Critically evaluate this statement.**

The Treaty of Versailles was the most important of the peace treaties that brought World War I to an end. The Treaty ended the state of war between Germany and the Allied Powers. It was signed on 28 June 1919 in Versailles, exactly five years after the assassination of Archduke Franz Ferdinand, which had directly led to the war.

Terms of treaty -

1. War guilt - Germany had to accept the guilt for starting the war.
2. Armed forces - The German army was limited to 100,000 men. Soldiers had to be volunteers.

नहीं कर सकता था। 1919 ई. जर्मनी को संधि को स्वीकार हेतु विवश किया।

इस संधि से जर्मनी से एल्सेस लॉरेन प्रदेश, फ्रांस को दे दिये गये। जर्मनी डान्जिंग बन्दरगाह को स्वतंत्र नगर बना दिया।

सैन्य व्यवस्था में, आर्थिक व्यवस्था में अनेक बदलाव किये गये।

इसलिए— 1919 ई. में जर्मनी के साथ हुई वर्साय की संधि, में द्वितीय विश्व युद्ध के बीज निहित थे।

Germany was not allowed armoured vehicles, submarines or aircraft.

The Rhineland became a demilitarised zone means no German troops.

3. Reparations - Germany had to pay for the damage caused by the war. Later it was set at £6,600 million (£6.6 billion), an enormous amount.

4. German territories and colonies - Alsace - Lorraine went to France. Eupen, Moresnet and Malmedy went to Belgium.

North Schleswig went to Denmark (after a vote). West Prussia and Posen went to Poland Danzig became a free city controlled by the League of Nations (giving Poland a seaport).

This created a situation of economic crisis & national humiliation. Reactions to the Treaty in Germany were very negative. There were protests in the German Reichstag (Parliament) and out on the streets. It is not hard to see why Germans were outraged. Germany lost 10% of its land, all its overseas colonies, 12.5% of its population, 16% of its coal and 48% of its iron industry. There were also the humiliating terms, which made Germany accept blame for the war, limit their armed forces and pay reparations. This led to the second world war.

G - जागीरदारी संकट क्या था। संकट के लिए जिम्मेदार विभिन्न कारणों पर चर्चा करें।

जागीरदारी प्रथा भारत में मुस्लिम शासन काल में विकसित हुई थी। इस प्रथा के अंतर्गत सरदारों को नकद वेतन न देकर जागीरें प्रदान कर दी जाती थी। उन्हें जागीरों का प्रबंध करने तथा माल गुजारी वसूल करने का हक दे दिया जाता था।

जागीरदारी संकट सर्वाधिक मुगल बादशाह औरंगजेब के समय था तथा इसके उत्तरवर्ती शासकों को भी इस संकट को झेलना पड़ा।

संकट के लिए कारण—

- सुल्तान या बादशाह की वार्षिक आय कम होना।
- जागीरदार प्रथा सल्तनत काल से चली आ रही थी जिससे जमींदार इस प्रथा को बनाये रखना चाहते थे।
- मुगल बादशाह को कमजोर तथा उनके पतन का महत्वपूर्ण कारण भी है।
- इससे सामंती शासन शुरू हुआ और केन्द्रीय सरकार कमजोर होती गई।

G - What was the Jagirdari Crisis. Discuss the various causes responsible for the crisis.

In the Mughal Empire, the king, being the owner of the land, distributed rights to tax farmers to collect taxes over particular territories. These tax farmers could exercise their right on an area for a temporary tenure after which they would be assigned a new area. These assignments were known in the Mughal empire as Jagir.

The tax farmers were allowed to collect all the revenue generated from agriculture on the piece of land assigned to them but were expected to pay a certain fraction, as decided by the king, of the collection as owing allegiance to the king and the empire.

The Jagirs were constantly transferred, on average barely exceeding two to three years, to keep the Jagirdars from establishing their grounds in one area and hinder them from accumulating power or resources, which could be a threat to the Mughal Empire. The Jagirdari system was initially designed to cope with a socio-political situation that was rapidly changing during the eighteenth century.

As time passed by, the old hierarchical society and the Jagirdari system were at odds with the rising social forces. There was a continuously deepening social crisis because of the significant increase of the number of Jagirdars and not enough Khalisa land for the king to offer to his noblemen. With increasing successful conquests and liaisons, the size of the nobility increased and with that, claimants of Jagir increased as well. This increase led to a division of the land and mansabs were now smaller than before. These smaller areas of lands also meant that smaller forces were held by the Jagirdars and thus, zamindars became stronger in this scenario.

H - स्वदेशी आंदोलन क्यों असफल हुआ।

7 अगस्त 1905 ई. को बंगाल विभाजन के विरोध, में स्वदेशी आन्दोलन को प्रारंभ किया गया, जिससे विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया।

स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व बंगाल में अरविंद घोष व सुरेन्द्र नाथ बनर्जी मुम्बई व पुणे में तिलक, पंजाब में अजीत सिंह ने संभाला।

स्वदेशी आन्दोलन में राष्ट्रीय शिक्षा, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया गया, इस आन्दोलन में विद्यार्थियों में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

किन्तु इस आन्दोलन का प्रसार सिमित क्षेत्र तक ही रहा बंगाल महाराष्ट्र, पंजाब आदि तक, इस आंदोलन में मुसलमानों व कृषकों की सहभागिता नहीं रहीं।

1907 ई. कांग्रेस विभाजन, अरविन्द घोष का राजनीति से सन्यास लेना, इससे आन्दोलन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा जो अपने उद्देश्य पहुँचने में असफल रहा। किन्तु 1911 ई. में बंगाल विभाजन रद्द कर दिया।

H - Why did the Swadeshi movement fizzle out. Explain.

The Swadeshi Movement began as an agitation to oppose the Bengal partition, which later turned into a mass movement throughout the country. With the start of Swadeshi Movement at the turn of the century, the Indian National Movement took a major leap forward.

The Swadeshi Movement fizzled out due to the following reasons:

Firstly, the government, seeing the revolutionary potential of the Swadeshi Movement, came down with a heavy hand. Repression took the form of controls and bans on public meetings, processions and the press. Student participants were expelled from Government schools and colleges, debarred from Government service, fined and at times beaten up by the police.

Secondly, the internal squabbles, and especially, the Surat split, in 1907 in the Congress, the apex all-India organisation, weakened the movement. Also, though the Swadeshi Movement had spread outside Bengal, the rest of the country was not as yet fully prepared to adopt the new style and stage of politics. Bipan Chandra Pal and Aurobindo Ghosh retired from active politics, a decision not unconnected with the repressive measures of the Government.

Third, the Swadeshi Movement lacked an effective organisation and party structure. The movement had thrown up programmatically almost the entire gamut of Gandhian techniques such as passive resistance, non-violent non-cooperation, the call to fill the British jails, social reform, constructive work, etc.

I - मालवा पेंटिंग की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

मध्यप्रदेश का मालवा अपनी चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है—

सवनाही— सवनाही पेंटिंग श्रवण मास में हरतालिका पर्व के अवसर पर गोबर से बनाई जाती है।

संजा— मालवा क्षेत्र में किशोरियाँ श्राद्ध पक्ष में दीवार पर गोबर, फूलपत्ती अथवा चमकीली पत्तियों को सोलह दिनों तक सजाकर अलग-अलग आकृतियाँ बनाती है।

मांडना— भूमि अलंकरण के रूप में मांडना सर्वथा स्वतंत्र और पूर्ण कला विधा है यह दीपावली पर बनाई जाती है।

दिवासा— यह मालवा क्षेत्र में प्रचलित भित्ति चित्र कला है।

चित्रावणा— चितरे जाति के द्वारा घर तथा मंदिर की दीवारों पर चित्रावण उत्कीर्ण किये जाते हैं। विशेषकर इसमें मुख्यतः विवाह समारोह के चित्रण अंकित किये जाते हैं।

J - भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन का मूल्यांकन करें।

— भारत में सामाजिक सुधार 19 वीं सदी में प्रारंभ हुआ था, जो भारतीय समाज में मौजूद कुरीतियों को दूर करने के लिए कई सामाजिक सुधार आन्दोलन किये। इस आन्दोलन ने भारतीयों को आत्मचिंतन करने हेतु प्रेरित किया और इसी प्रेरणा से पाश्चात्य शिक्षा एवं उदारवादी विचार धारा प्राप्त हुई।

इस आन्दोलन में बुद्धिजीवियों कवियों, पत्रकारों, धर्मगुरुओं एवं राष्ट्रवादी विचारकों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

जैसे— राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती केशवचन्द्र जेन, अरवबार, संवाद कौमुदी, आदि का योगदान महत्वपूर्ण

I - Throw light on the characteristics of Malwa painting.

Malwa paintings show a fondness for rigorously flat compositions, black and chocolate-brown backgrounds, figures shown against a solid colour patch, and architecture painted in lively colour.

The school's most appealing features are a primitive charm and a simple childlike vision. Some of the important paintings executed in the Malwa style are a series of the Rasikapriya dated 1634 A.D., a series of the Amaru Sataka painted in 1652 A.D. at a place called Nasratgarh and a series of the Ragamala painted in 1680 A.D. by an artist named Madhau Das, at Narasyanga Shah, some of them available in the National Museum, New Delhi, another Amaru-Sataka of the same period in the Prince of Wales Museum, Bombay and a Ragamala series of about 1650 A.D. in the Bharat Kala Bhavan, Banaras.

J - Evaluate the Socio - Religious reform movement in India.

Process of religious reform had started almost in all Indian religions in the 19th century. Various factors led to socio-religious reforms in Indian society. A lot of socio-religious reform movements took place in the 19th century. Social evils like Purdah system, restrictions on widow remarriage, Sati system, Female Infanticide, Polygamy, Polytheism etc., were aimed to reforms. Superstition, dogmas, religious rigidities, idolatry, caste hierarchy, obscurantism were also reformed. Western influences and education played an important role in all these reforms. Modern science, rationality and the

रहा।

सुधारात्मक कदम—

- सिविल मैरिज एक्ट— 1872
- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम— 1856
- 1830 ई. सती प्रथा पर प्रतिबन्ध।
- 1843 ई. दास प्रथा को प्रतिबन्ध कर दिया गया।

conclusion of humanism were the vital factors that influenced all the reformers.

In 19th century these reforms came through various organizations and institutions, like in Hindu religion, the Brahma Samaj and Arya Samaj, in Muslim religion, Ahmadia and Aligarh movement, in Parasi, Rahnumai Majdayasan sabha and in Sikh religion, Akali movement came into existence.

If we look upon the character of the socio-religious reforms, we see that movements like Aligarh movement, Wahabi movement and Deoband movement were concerned with Muslim socio-religious reforms, which sometimes became critical to national interest, same was the case with Hindu religious movements like Bharat Dharma Mahamandal, which preached Orthodoxy.

Socio-religious reforms contributed a lot in modern national movement and played the prime role. Leaving all socio-religious controversies by the socio-religious leaders strengthened India social system. These reforms helped Indians in liberating individual, making religion more personal affairs, strengthening, secularism, reducing caste-based and religion based differences, providing a base for social modernization and important of all increasing national consciousness.

K - प्लासी के युद्ध का ऐतिहासिक महत्व लिखिए।

23 जून 1857 ई. को ईस्टइंडिया कंपनी की सेना एवं बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला तथा उनके फ्रांसीसी सहयोगियों के मध्य हुआ। इसमें बंगाल नवाब की पराजय हुई।

ऐतिहासिक महत्व—

- ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में व्यापार हेतु एक स्थायी व सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ।
- इस युद्ध अंग्रेजों के लिए 200 वर्षों के लिए भारत में द्वार खोल दिए थे।
- बंगाल का राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था पर अंग्रेजों का अधिकार।
- बक्सर के युद्ध की पृष्ठ भूमि का निर्माण हुआ।
- बंगाल भारत का समृद्ध एवं उपजाऊ प्रांत था साथ ही समुद्र तटीय व्यापार के लिए उपयुक्त था। इसलिए बंगाल पर अधिकार कर प्राप्त हुआ।

K - Write the historical significance of the Battle of Plassey.

The Battle of Plassey [2] was a major battle that took place on 23 June 1757 at Palashi, Bengal. It was an important British East India Company victory over the Nawab of Bengal and his French allies. It let the British East India Company take control of this part of the Indian subcontinent. Their area of control grew over a large part of the Indies in the next hundred years.

How it shaped Indian History

- a. Bengal was richest province in India and it was acquired without bloodshed and treachery
- b. It established Britishers as the most powerful force in India
- c. East India company got Odisha and Bengal Diwani rights and got immense money from it
- d. Puppet was established on Bengal King place
- e. It gave way to Dyarchy where Nawab was responsible for daily work and East India Company was collecting revenues

– भारतीय शक्ति को कमजोर बना दिया।

- f. Bengal was looted with both hands
- g. All Industry of India was demolished
- h. Indians export was mostly from Bengal of Textile and it was reduced effectively

After the war British understood the Nature of Indian and made their way to acquire full India. In next 5 years Britishers defeated French (1761) Battle of Buxar: 1764 and got control of north India till Delhi and Awadh and in the next 50 years whole India fell.

So, we can say that the Battle of Plassey was is the most significant war in Indian history, This war is one of the war, which led the way for the demise of Indian kingdoms and led foundation stone of empire of British in India which ruled it for the next 190 years and looted with both hands and left India form GDP of 26% in world to just a mere 2%.

L - इलबर्ट बिल विवाद क्या है?

– ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड रिपन ने इलबर्ट बिल विधेयक 1883 को वर्ष 1884 ई. में प्रचलित भेदभाव को समाप्त कर दिया था इसलिए 1884 ई. में रिपन के समय यह विवाद हुआ।

इस बिल के द्वारा भारतीय न्यायाधीशों यूरोपीयों के विरुद्ध मुकदमें की सुनवाई कर सकता था, जबकि इससे पहले केवल यूरोपीय न्यायाधीश ही यूरोपीय व्यक्तियों से संबंधित मामलों की सुनवाई कर सकता था।

इस बिल का उद्देश्य न्यायपालिका में भारतीय और यूरोपीय सदस्यों के मध्य अंतर को समाप्त करना था। लेकिन इस बिल का यूरोपवासियों के द्वारा विरोध किया गया जिससे इस बिल को वापस लेना पड़ा।

निश्चित रूप से इलबर्ट विवाद ने भारतीयों पर गहरा प्रभाव डाला, और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक मजबूत एवं व्यापक संगठन की आवश्यकता महसूस हुई।

जिसके परिणाम स्वरूप 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

इलबर्ट बिल विवाद को श्वेल विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है।

L - What is ilbert bill controversy ?

The famous Ilbert Bill was introduced in 1883, by Lord Ripon, the then Viceroy of India, which was drafted by Sir C.P. Ilbert and was named after Courtenay Ilbert, the then legal adviser to the Council of India.

It was directed at abolishing judicial disqualification based on race distinctions. However, this was not acceptable to the conservative sections of the British in India and they started a Defence Association to defend their special privileges.

The educated Indians too counter-agitated. Finally, the government withdrew the Bill and enacted a measure that vested the power of trying Europeans to a Session Judge and a District Magistrate who might be an Indian. The Bill made it clear to the Indians that the British government was never going to recognise equality in its official policy and that there was no option but to agitate for desired legislations. The passage of this bill opened the eyes of the Indians and deepened antagonism between the British and Indians. The result was wider nationalism and establishment of Indian National Congress in the next year.

PART- B 15 Marks

A - मध्य प्रदेश के संदर्भ में 1857 के विद्रोह पर विस्तार से चर्चा करे।

मध्य प्रदेश में 1857 का विद्रोह

- 1857 के विद्रोह में मध्य प्रदेश का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रदेश में यह विद्रोह 3 जून, 1857 को नीमच छावनी से पैदल और घुड़सवार सैनिकों के द्वारा प्रारम्भ हुआ, किन्तु कर्नल सी.बी. सोबर्स ने उदयपुर के राजपूत सैनिकों की सहायता से नीमच के किले एवं निम्बाहेड़ा पर अधिकार कर इस विद्रोह को समाप्त कर दिया।
 - शेख रजमान के नेतृत्व में अश्वारोही सैन्य टुकड़ी ने सागर में विद्रोह किया, और शंकरशाह तथा उनके पुत्र ने गढ़ा मण्डला, राजा ठाकुर प्रसाद ने राघवगढ़, श्री बहादुर और देवी सिंह ने मण्डला तथा जमींदार नारायण सिंह ने रायपुर में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया।
 - 20 जून, 1857 को शिवपुरी में विद्रोह के पश्चात् बुन्देलखण्ड के स्थानीय सैनिकों ने भी विद्रोह किया। इस विद्रोह में भोपाल की सिकन्दर जहाँ बेगम ने कर्नल ड्यूरेंड, कर्नल स्टाकतो ट्रेबर्न, कैप्टन लुडओ तथा कोब को शरण दी थी।
 - मई में 1 जुलाई, 1857 को शआदत खाँ के नेतृत्व में विद्रोह प्रारंभ हुआ, किन्तु ब्रिगेडियर स्टुअर्ट ने इस विद्रोह का दमन कर दिया। 4 अप्रैल, 1858 को झाँसी पर सर ह्यूरोज ने आक्रमण किया जिसमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने तात्या टोपे के साथ मिलकर ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। 17 जून, 1858 में रॉयल आयरिश के विरुद्ध युद्ध करते हुए रानी लक्ष्मीबाई अपनी अंग रक्षिका झलकारी बाई के साथ ग्वालियर के समीप (कोटा की सराय) में वीरगति को प्राप्त हो गयीं।
 - 1857 ई. के विद्रोह के महान योद्धा तात्या टोपे(मूल नाम रामचन्द्र पाण्डुरंग) ने अपनी छापामार रणनीति से अंग्रेजों को क्षति पहुँचाई। तात्या टोपे को महाराष्ट्र का बाघ कहा जाता है। तात्या टोपे को सिंधिया के एक सामंत मानसिंह ने षडयंत्रपूर्वक अंग्रेजों के द्वारा बन्दी बनवा दिया गया और 18 अप्रैल, 1859 को उन्हें शिवपुरी में फाँसी दे दी गई।
- मध्य प्रदेश: 1857 कर क्रांति के प्रमुख विद्रोही विद्रोही सम्बंधित स्थल
- तात्या टोपे कानपुर—झाँसी—ग्वालियर
 - रानी लक्ष्मीबाई झाँसी—कालपी
 - टाट्या भील खरगोन
 - शेख रमजान सागर

A - Discuss in detail The Revolt of 1857 in M.P.
Freedom struggle in MP had been parallel to freedom struggle of India. The revolt of 1857 was the first agitation with in an all India character.

It affected an extensive region from Meerut to Maharashtra involving all sections and religion of Indian society. Only after a month of spark of revolt in meerut in Delhi it spread to distant areas of India in swept in Sagar, Narmada tertiary and Malwa region including tertiary of Nagpur.

The spark of revolt of 1857 ultimately culminated in the form of fire across the nation.

MP was also among many states which are burning in that fire.

the first outbreak of revolt of 1857 took place in neemuch cantonment area where the infantry and cavalry together revolted input the cantonment on fire.

the bungalows of British officials said to fire soon the Indian soldiers at marar cantonment destroyed and rebelled communication channels between gwalior and shivpuri.

Some of the important soldiers of revolt of 1857 are -

Rani lakshmi bai - She was born on 19 November 1835. Her real name was Manikarnika or Mannu. She married to Gangadhar Rao of Jhansi but due to policy of Doctrine of Lapse britishers annexed Jhansi. On 7th of June 1857 revolt growth out in Jhansi and again Jhansi came under Lakshmi Bai rule which ended up to 10th month. In March 1858 British commander Huros defeated Rani Lakshmi Bai and on 18th June 1858 Rani lakshmi bai sacrificed her life as Martyr.

Avanti Bai in the Revolution of 1857 in ramgarh supplied the symbol of Jhansi in Central MP info against Britishers.

Shahadat Khan - He laid the revolt from MHOW with the help of Holkar King Tukoji Rao II.

TATYA TOPE - He was a military chief of army of peshwa and when peshwa Nana Saheb escape to Nepal he joined Rani Lakshmi Bai for military campaign against britishers. He was finally captured by britishers and hanged in Shivpuri on 18th April 1859.

- झलकारी बाई झाँसी (लक्ष्मीबाई की अंगरक्षिका)
- राजा ठाकुर प्रसाद राघवगढ़
- नारायण सिंह रायपुर
- सआदत खान महु
- रानी अवन्तीबाई रामगढ़
- भीमा नायक मण्डलेश्वर (उज्जैन)
- गिरधारी बाई रामगढ़ (अवन्तीबाई की अंगरक्षिका)
- शंकरशाह गढ़ा मण्डला
- मंडलेश्वर में भी वर्ष 1857 के विद्रोह का व्यापक प्रभाव रहा। यहाँ बंगाल रेजीमेंट के कैप्टन बेंजामिन हेब्स की विद्रोहियों द्वारा हत्या करने के पश्चात् 2 वर्ष तक शासन किया। किंतु 1859 ई. में यहाँ पुनः अंग्रेजों का अधिकार हो गया तथा विद्रोही सैनिकों को समूहिक रूप से फाँसी दे दी गई।
- मंडला जिले में रामगढ़ रियासत के जमींदार की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेजों ने राज्य हड़प नीति के अन्तर्गत एक ब्रिटिश तहसीलदार की नियुक्ति की, जिसका रानी अवन्तीबाई ने विरोध किया। उन्होंने मण्डला के समीप खेती गाँव में ब्रिटिश सेनापति वार्डन से युद्ध कर उसे पराजित किया तथा रामगढ़ में नियुक्त ब्रिटिश तहसीलदार की हत्या कर पुनः अधिपत्य स्थापित कर लिया था।
- दिसम्बर, 1857 में अंग्रेज सेनापति वार्डन ने रीवा राज्य की सेना की सहायता से पुनः गढ़मण्डला पर आक्रमण कर रामगढ़ किले को घेर लिया और 20 मार्च, 1858 को युद्ध में पराजय की आशंका से अवन्तीबाई ने अपनी अंगरक्षिका गिरधारीबाई के साथ कटार घोपकर आत्महत्या कर ली।

B - फ्रांसीसी क्रांति के कारणों का वर्णन करें।

- फ्रांसीसी क्रांति (1789–1815) : फ्रांस की राज्य क्रांति (1789) फ्रांस की निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजतन्त्र (सम्राट—लुई XVI) के विरुद्ध एक बड़ी क्रांति थी, जिसके मूल में असमानता और भेदभाव पर आधारित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था विद्यमान थी। इस क्रांति की शुरुआत 14 जुलाई, 1789 को बास्तील दुर्ग के पतन के साथ हुई। जिसने सम्पूर्ण विश्व में स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व पर आधारित मापदंडों को प्रसारित किया। फ्रांसीसी क्रांति का नारा—स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व

Sheikh ramzan - He lead the revolt against britishers from Sagar and under his leadership cavalry forces revolted in Sagar.

Bakhtawar Singh - He was the king of Aamjhera in participate in first revolt 1857. He was arrested in forest of Lalgargh fort and hang to death at Indore.

Tantya bhil - He fought against the British from Western nimar region and raise the voice against British but arrested and sent in jail.

Shankar Shah- He was ruler of Garh Mandla revolted against the British rule with his son but captured by britishers.

Though the revolt of 1857 was sparked in Neemuch its flame spread in all other areas such as Malwa, Nimar, Bundelkhand.

Participation of people increased for the struggle with full enthusiasm. Many leaders again great achievements such as 3rd irregular cavalry and 42nd infantry under Sheikh Ramzan of Zafar spread The revolt and Khan brothers that is Adil Mohammed and Fasid Mohammed Khan occupied Sujhera Fort.

The revolt of 1857 was the first war of independence which though in record had given success to britishers but it lit up the feeling of nationalism in every individual. It come out with the theory of one nation which was looking before it. It provided a pace and rhythm to the nationalist to move forward for the independence of the country.

B- Describe the causes of French Revolution.

In the year 1789, French Revolution started leading to a series of events started by the middle class. The people had revolted against the cruel regime of the monarchy. The start of the revolution took place on the morning of 14th July 1789 in the state of Paris with the storming of the Bastille which is a fortress prison.

Causes of French Revolution

Although there were innumerable causes and reasons for the French Revolution a few have been found to be the main culprits. These causes can be divided accordingly

Social Cause

कारण :-

फ्रांस की क्रांति सन् 1789 से शुरू हुई लेकिन इसका बीजारोपण उससे पहले हो चुका था जो फ्रांस के दोषपूर्ण प्रशासन, सामाजिक विभेद, आर्थिक असंतोष आदि में निहित थे जिनको समय-समय पर रूसो, दिदरो तथा मांटेस्व्यु जैसे विद्वानों ने समाज के सामने प्रत्यक्ष किया।

1. राजनीतिक कारण :-

फ्रांस में वंशानुगत निरंकुश राजतन्त्र था तथा राजा स्वयं का पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधि मानता था। लुई चौदहवें 'मैं ही राज्य हूँ' कहकर अपनी निरंकुश सत्ता का परिचय दिया। लुई सोलहवें के समय यह निरंकुशता पराकाष्ठा पर पहुँच गयी।

इसके अतिरिक्त कानूनों की अराजकता, अकुशल शासन, सैनिक व्यवस्था दोषपूर्ण, भ्रष्टाचार, राजा की अयोग्यता एवं विलासी प्रवृत्ति आदि कारणों ने फ्रांसीसी क्रांति को बढ़ावा दिया।

2. समाज कारण :-

असामनता के आधार पर खड़े फ्रांसीसी समाज में घोर असंतोष व्याप्त था। समाज मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त था—

पादरी वर्ग तथा कुलीन वर्ग को विशेषाधिकार प्राप्त था। जबकि सर्वसाधारण वर्ग सुविधाहीन था। पादरी वर्ग तथा कुलीन वर्ग द्वारा इनका शोषण किया जाता था।

3. आर्थिक कारण :-

देश की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी, इसके लिए सरकार की फिजूलखर्ची, दोषपूर्ण एवं भेदभावपूर्ण कर प्रणाली, कर का अत्यधिक बोझ, 1770-80 की आर्थिक मंदी, 1785 का सूखा तथा 1788 की अतिवृष्टि उत्तरदायी है। यह कहावत चरितार्थ हो चली थी कि "पादरी आय के अनुसार व्यय करने के बजाय व्यय के अनुसार आय को निश्चित करती थी।"

4. बौद्धिक कारण/दार्शनिकों की भूमिका :-

फ्रांस में अनेक दार्शनिकों जैसे — मांटेस्व्यु, वाल्टेयर, रूसो, दिदरो आदि के साहित्य ने क्रांति की वैचारिक परिस्थितियों निर्मित की। इसने लोगों के असंतोष को उभारा तथा राजतन्त्र की निरंकुशता, क्रांति के अग्रदूत रूसो ने अपनी पुस्तक 'सोशल कांटेक्ट' में कहा कि "व्यक्ति स्वतंत्र पैदा हुआ है लेकिन सर्वत्र ही वेड़ियों में जकड़ा है।"

(नेपोलियन ने कहा था कि रूसो न होता तो क्रांति न होती)

As over the old regime, the French society and institution are described much before 1789 wherein the society was divided into three estates—the clergy, the nobility, and the commoners.

The first state included the group of people who were involved in the church matters known as clergy. The second estate includes people who are highly ranked in state administration known as nobility. The first two estates enjoy all the privileges right from the birth and are even exempted from any kind of taxes to the state. The third estate comprises of big businessmen, court, lawyers, officials, artisans, peasants, servants and even landless laborers. This estate usually were the ones who must bear the taxes.

Economic Cause

The population of France had risen between 1715 and 1789 from about 23 million to 28 million. This, in turn, leads to surplus demand for food grains, further leading to lack of pace in the production cycle as relative to demand – ultimately leading to rise in price for the food grains.

Majority of the laborers who worked in the workshops didn't see any increase in their wages. And the taxes were not lowered. This eventually lead to a worst-case crisis leading to food grain scarcity or also known as Subsistence Crisis that occurred frequently during the old regime.

Political Cause

The long years of war had turned France into a dry land with almost no financial resources. During the year 1774, Louis XVI came into power and found nothing. In his reign, France helped the 13 American colonies to gain independence from Britain, who was their common enemy.

The state during this time was forced to increase the taxes as they had to meet the regular expense that included the cost of upholding an army, running government offices or universities and running governments.

Impact of the French Philosophers - The revolutionary ideas of these philosophers spread throughout France and created awareness among the masses.

Inspiration from the American War of Independence

- मांटेस्क्यू (पुस्तक–स्प्रिट ऑफ लॉज) ने व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत दिया।
- वाल्डेयर उदार निरंकुशवाद के समर्थक थे उन्होंने कैथोलिक चर्च की बुराइयों पर तीक्ष्ण प्रहार किया।
- दिदरो (पुस्तक–विश्लेष) ने राजा की निरंकुशता, चर्च की भ्रष्टता और सामाजिक असमानता पर आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

5. अमेरिकी क्रांति (1775–83) की भूमिका :-

फ्रांस ने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (अमेरिकी क्रांति) में हिस्सा लिया। अमेरिकी क्रांति ने दो रूपों में फ्रांस की क्रांति का आधार तैयार किया—

- (1) फ्रांस के सैनिक अमेरिका से उदार विचारधारा से प्रभावित होकर लौटे। इन सैनिकों ने फ्रांस के जनमानस को अपने ढंग से प्रभावित किया।
- (2) अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी की वजह से फ्रांस का खजाना खाली पड़ गया इससे फ्रांस में आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।

6. तात्कालिक कारण :-

फ्रांसीसी क्रांति का तात्कालिक कारण देश की शोचनीय आर्थिक दशा थी। इस दशा में सुधार संबंधी विचार-विमर्श करने के लिए जनता के दबाव में आकर राजा लुई-16 ने 5 मई 1789 को वार्साय एस्टेट्स जनरल (प्रतिनिधि सभा) की बैठक बुलाई जो 175 वर्षों बाद हुई थी। इस बैठक में तृतीय एस्टेट ने यह माँग की कि सभी प्रतिनिधियों के बहुमत से निर्णय लिया जाना चाहिए। इसको लेकर बैठक में गतिरोध पैदा हो गया।

अंततः विवाद गहराता चला गया जिससे तृतीय एस्टेट लोगों ने एस्टेट्स जनरल का बहिष्कार कर दिया तथा सामने के कोर्ट टेनिस कोर्ट में एक सभा बुलाई और संघर्ष को सफलता तक पहुँचाने का संकल्प लिया "टेनिस कोर्ट की शपथ फ्रांसीसी क्रांति का वास्तविक आरम्भ था।"

C - दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी के प्रमुख आंदोलनों का वर्णन करें।

मोहनदास करम चन्द्र गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में एशियाई मजदूरों के साथ हो रहे रंगभेद उत्पीड़न व भेदभाव को समाप्त करने के लिए गांधी जी ने 1914 ई. तक इनके लिए संघर्ष किया।

दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख आन्दोलन—

संघर्ष का उदारवादी चरण (1894–1906): इस चरण में गांधीजी न दक्षिण अफ्रीकी सरकार को याचिकायें

The most important legacy of the French Revolution were its ideas of Liberty and Democratic rights which spread progressively in the 19th century from France to the rest of Europe where the feudal system was abolished. These ideas were later adopted by Raja Ram Mohan Roy and Tipu Sultan, the famous Indian revolutionary strugglers.

C - Describe the Major movements of Gandhiji in South Africa.

Before leading the Indian freedom movement, Mohandas Karamchand Gandhi used to live in South Africa to fight against injustice and class division. Within 10 years, Gandhi propagated the philosophy of Satyagraha there and propelled the country towards a no class or ethnic discrimination society. His involvement in the non-violent movement in South Africa had made such an impact that even now, he is looked up to as a leader there.

एवं प्रार्थना-पत्र सौंपने की नीति अपनायी। उन्होंने ब्रिटेन को भी इस संबंध में अनेक प्रार्थना-पत्र भेजे। उन्होंने ब्रिटेन से मांग की कि भारत, ब्रिटेन का उपनिवेश है।

अहिंसात्मक प्रतिरोध या सत्याग्रह का काल (1906-1914): दक्षिण अफ्रीका में गोरी सरकार के विरुद्ध गांधीजी के संघर्ष का दूसरा चरण 1906 में प्रारम्भ हुआ। इस चरण में गांधीजी ने अहिंसात्मक प्रतिरोध या सविनय अवज्ञा की नीति अपनायी, जिसे उन्होंने सत्याग्रह का नाम दिया।

पंजीकरण प्रमाणपत्र के विरुद्ध सत्याग्रह (1906): दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने एक विधान बनाकर प्रत्येक भारतीय के लिये यह अनिवार्य कर दिया कि वे अपने अंगूठे के निशान वाले पंजीकरण प्रमाणपत्र को हर समय अपन पास रखें। तदुपरांत गांधीजी के नेतृत्व में सभी भारतीयों ने इस भेदभावमूलक कानून का विरोध करने का निर्णय लिया। गांधीजी ने इस हेतु 'अहिंसात्मक प्रतिरोध सभा' का गठन किया।

प्रवासी भारतीयों के प्रवेश पर रोक का विरोध: इस बीच सरकार ने एक और कानून बनाया, जिसका उद्देश्य प्रवासी भारतीयों के प्रवेश को रोकना था। इस कानून का विरोध करने हेतु अनेक वरिष्ठ भारतीय नटाल से ट्रांसवाल आये। ट्रांसवाल के तमाम भारतीयों ने भी आंदोलनकारियों का साथ दिया।

टालस्टाय फार्म की स्थापना: गांधीजी ने 'टालस्टाय फार्म' की स्थापना की। इस फार्म में गांधीजी ने अपने एक जर्मन शिल्पकार मित्र कालेनबाख की मदद से सत्याग्रहियों के परिवार की पुर्नवास समस्या को हल किया तथा उनके भरण-पोषण की व्यवस्था की। भारत से भी यहां काफी पैसा भेजा गया।

पोल टैक्स तथा भारतीय विवाहों को अप्रामाणित करने के विरुद्ध अभियान: इस बार सत्याग्रह का स्वरूप बड़ा था। इकरारनामे की अवधि समाप्त होने पर दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों पर सरकार ने तीन पौंड का कर लगा दिया। इसके खिलाफ तीव्र सत्याग्रह छिड़ गया। भारतीयों में ज्यादातर गरीब मजदूर हैं, जिनकी मासिक आमदनी 10 शिलिंग से भी कम था। ऐसे में तीन पौंड का कर उनके लिये बहुत ज्यादा था। जब इस नियम के विरुद्ध सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ तो इसमें लगभग सभी भारतीयों ने भाग लिया तथा इस व्यापक जन-आंदोलन का रूप दे दिया।

गांधीजी, लार्ड हार्डिंग तथा गोखले तथा सी.एफ.एन्ड्रयूज से कई दौर की लंबी बातचीत के पश्चात् दक्षिण

Major movement of Gandhiji in South Africa Formation of Natal Indian Congress -

While he was travelling by train to Pretoria, Gandhi, despite carrying first class ticket, was thrown out of the train by the authorities because a white man complained of an Indian sharing the space with him. As a response, Gandhi formed the Natal Indian Congress in 1894. This organisation led non-violent protests against the oppressive treatment of the white people towards the native Africans and Indians.

Satyagraha against Registration Certificates (1906)

A new legislation in South Africa made it compulsory for Indians to carry at all times certificates of registration with their fingerprints. The Indians under Gandhi's leadership decided not to submit to this discriminatory measure. Gandhi formed the Passive Resistance Association to conduct the campaign. The Government jailed Gandhi and others who refused to register themselves. The Indians under the leadership of Gandhi retaliated by publicly burning their registration certificates.

He organised the **Indian Ambulance Corps** for the British during the outbreak of the Boer War in 1899. So that British could understand humanity but the ethnic discrimination and torture continued on Indians.

He set up **Phoenix Farm** near Durban where Gandhi trained his cadre for peaceful restraint or non-violent Satyagraha. This farm is considered as the birthplace of Satyagraha

Campaign against Restrictions on Indian Migration

The earlier campaign was widened to include protest against a new legislation imposing restrictions on Indian migration. The Indians defied this law by crossing over from one province to another and by refusing to produce licences.

Setting up of Tolstoy Farm

As it became rather difficult to sustain the high pitch of the struggle, Gandhi decided to devote all his attention to the struggle. The Tolstoy Farm was meant to house the families of the Satyagrahis and to give them a way to sustain themselves.

Invalidation of Indian Marriages

अफ्रीकी सरकार ने भारतीयों की मुख्य मांगें मान ली। तीन पौंड का कर तथा पंजीकरण प्रमाणपत्र स सम्बद्ध कानून समाप्त कर दिये गये। भारतीयों को उनके रीति-रिवाजों से विवाह करने की छूट प्रदान की गयी तथा भारतीय अप्रवासियों की अन्य कठिनाइयों पर दक्षिणी अफ्रीकी सरकार ने सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

Fuel was added to the fire by a Supreme Court order which invalidated all marriages, not conducted according to Christian rites and by the registrar of marriages.

By implication, Hindu, Muslim and Parsi marriages were illegal and children born out of such marriages, illegitimate.

The Indians treated this judgement as an insult to the honour of their women and many women were drawn into the movement because of this indignity.

He organised another Satyagraha movement in Transvaal against the oppression that Indian minors were suffering from. He led around 2,000 Indians across the **Transvaal border**.

Thus Gandhi's faith in the capacity of masses to fight established through his experience in South Africa. He was able to evolve his own style of leadership and politics and techniques of struggle for mass based from moderate based struggle of petition and prayers to gandhian methods of non cooperation, civil disobedience and persuading by attacking the conscience of oppressor.

D - GOI अधिनियम 1935 के मुख्य प्रावधानों का वर्णन करें और इसकी आलोचनाओं का उल्लेख करें।

— भारत सरकार अधिनियम— 1935 को 3 जुलाई 1936 को आंशिक रूप से लागू किया गया, किन्तु अप्रैल 1937 में यह पूर्ण रूप से लागू हुआ।

इस अधिनियम में 14 भाग 321 धाराएँ तथा 10 अनुसूचियाँ थीं इससे प्रस्तावना का अभाव था अतः 1919 के अधिनियम की प्रस्तावना को इसके साथ जोड़ा गया था।

मुख्य प्रावधान—

- इस एक्ट से संघात्मक सरकार की स्थापना का प्रयास किया गया।
- प्रान्तों का द्वैध शासन समाप्त कर केन्द्र स्तर पर द्वैध शासन प्रणाली स्थापित की गई।
- प्रान्तों का द्वैध शासन समाप्त कर केन्द्र स्तर पर द्वैध शासन प्रणाली स्थापित की गई।
- विषय के विभाजन के तीन सूचियाँ बनाई गई।
- प्रान्तों के प्रतिनिधि चुनाव प्रक्रिया व रियासतों के प्रतिनिधि, राजाओं द्वारा मनोनीत होते थे।
- वर्मा को भारत से पृथक कर दिया गया।
- इस एक्ट के तहत एक संघीय न्यायलय की स्थापना

D - Describe the main provisions of GOI Act 1935 and also mention its criticism.

The Government of India Act was passed by the British Parliament in August 1935. It was the longest act enacted by the British Parliament at that time.

Major Provisions

Creation of an All India Federation

This federation was to consist of British India and the princely states. The provinces in British India would have to join the federation but this was not compulsory for the princely states.

Division of powers

This Act divided powers between the centre and the provinces. There were three lists which gave the subjects under each government.

Federal List (Centre)

Provincial List (Provinces)

Concurrent List (Both)

The Viceroy was vested with residual powers.

Provincial autonomy

The Act gave more autonomy to the provinces. Diarchy was abolished at the provincial levels.

Diarchy at the centre

The subjects under the Federal List were divided into two: Reserved and Transferred.

की गई।

- इस एक्ट के द्वारा स्थापित संघ में अवशिष्ट शक्तियाँ गवर्नर जनरल को प्रदान की गई थीं।
- GOI अधिनियम की अलोचनात्मकता—
- इस अधिनियम से प्रान्तीय सरकार की शक्तियाँ कमजोर कर दी गईं। वहीं केन्द्र सरकार को शक्तिशाली बनाया गया।
- गवर्नर जनरल की अवशिष्ट शक्तियाँ तानाशाही का लक्षण है।
- प्रान्तों व क्षेत्रीय स्तर पर इससे सामाजिक व राजनीतिक भेदभाव उत्पन्न हुआ।
- वर्मा जो भारत का अभिन्न अंग था जिससे सरकार पृथक कर दिया गया। जिससे पूर्वी क्षेत्रों में असंतोष था।
- जवाहर लाल नेहरू ने इस अधिनियम को एक कार जिससे ब्रेक तो है पर इंजन नहीं। तथा 'दासता का अधिका पत्र' कहा था।
- जिन्ना ने इस एक्ट को पूर्णतया सड़ा हुआ, मूल रूप से बुरा कह कर पूर्णतया अस्वीकार कर दिया।
- इस अधिनियम में एक 'अखिल भारतीय संघ' की व्यवस्था की गयी। किन्तु यह व्यवस्था लागू नहीं हो सकी।

The reserved subjects were controlled by the Governor-General who administered them with the help of three councillors appointed by him. The transferred subjects were administered by the Governor-General with his Council of Ministers.

Bicameral legislature

A bicameral federal legislature would be established.

The two houses were the Federal Assembly (lower house) and the Council of States (upper house).

Franchise

This Act introduced direct elections in India for the first time. About 10% of the whole population acquired voting rights.

Criticism

The changes introduced by the Government of India act 1919 were too short of a self government in our country. There was only a partial transfer of powers through a system of dyarchy. The act was inadequate to satisfy the National aspirations.

The division of subjects in Reserved and transferred was illogical and not acceptable. In November 1920, there were elections which were boycotted by the congress.

The act of 1919 could not satisfy any one. The dyarchy as an experiment failed, when it was put to practice as there was no substantial transfer of power to the representatives of the people.

